अदृश्य पीड़ा

डॉ. मदन चंद्र करण

दिसंबर, 2024

'सबुज स्वप्न' द्वारा प्रकाशित

सभी अधिकार सुरक्षित

इस ई–बुक का कोई भी भाग किसी भी रूप में, किसी भी यांत्रिक माध्यम जैसे कि

ग्राफिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स या किसी अन्य माध्यम से पुनरू प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है, और
इस ई–बुक में कोई भी जानकारी प्रकाशक और

लेखक की अनुमति के बिना संग्रहीत नहीं की जा सकती है।

इस शर्त का उल्लंघन करने पर उचित

कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

विनिमय मूल्य – 100 रुपये

समर्पित

विश्व के सभी कविता प्रेमियों को...

संपादकीय

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉ. मदन चंद्रकरण को जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन, सऊदी, बांग्लादेश और भारत में कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। यहां तक कि विश्व शांति दिवस पर 'रवींद्र पुरस्कार' और 'त्रिपुरा बीएसएस अकादमी पुरस्कार' भी प्राप्त किया है। इसलिए उनकी रचनाओं में निश्चित रूप से कुछ मूल्यवान साहित्यिक पहलू उजागर होते हैं। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं। पेशे से एक प्रसिद्ध प्रोफेसर। यह कवि 'सबुज स्वप्न' (अंतरराष्ट्रीय बंगाली भाषा) ऑनलाइन पत्रिका में नियमित योगदानकर्ता हैं। वे हमारी पत्रिका की एक संपत्ति हैं। एक संपादक के रूप में, मैं कवि की लंबी आयु और उनके लेखन के निरंतर विकास की कामना करता हूं। कविता का अच्छा निर्णय और विश्लेषण केवल पाठकों के लिए है।

रंजीत चक्रवर्ती

संपादक, सबुज स्वप्न

अंतर्वस्तु

1.	एक शिक्षक की विरासत	7
2.	ईश्वर चंद्र विद्यासागर और भारत की बेटियों के लिए स्तुति (माइकल मधुसूदन, डॉ. मदन चंद्र करण की पंक्तियों से प्रेरित)	8
3.	जीवन का सपनाः एक आज़ाद पक्षी बनना	10
4.	मृत्यु और विवाह के बीच क्या अजीब रिश्ता है	11
5.	स्वर्ग की स्वप्निल लड़की	13
6.	जीवन का सपनाः एक आज़ाद पक्षी बनना	15
7.	इचमाती के प्रेम की स्तुति	16
8.	इचामती के प्रेम की स्तुति	18
9.	आवास ऋण डिफॉल्टर की शिकायत	20
10.	हरिचरण मुखर्जी की स्तुति	22
11.	एक बूढ़े शेर की शिकायत निवारण	24
12.	तूफ़ान का सामना किया	26
13.	बाल दिवस पर वयस्क बच्चे	28
14.	बीमार बच्चा	30
15.	सुंदरबन के सुदूर गाँव में बाघ की दहाड़ का सार	31
16.	एक सुदूर गाँव में एक असफल कम्युनिस्ट का व्यक्तिगत दुःख	33
17.	सुंदरबन के जंगल में भोर	35
18.	हिरण की प्यास	37
19.	स्वर्ग की स्वप्निल लड़की	39
20.	कौरवों की माता गांधारी की स्तुति	41
21.	शेख हसीना के लिए शक्ति की प्रार्थना	43
22.	द्रौपदी की स्तुति, साहस की रानी	45

23.	शिवाजी महाराज की स्तुति	47
24.	सद्भाव के लिए प्रार्थना	49
25.	पुरोहितवाद की जंजीरों के खिलाफ	51
26.	बंगाल के गाँव की सच्ची खूबसूरती	53
27.	गरीबी, भारत में एक अभिशाप	55
28.	सुकांत भट्टाचार्य को समर्पित स्तुति	57
29.	गलवान की परछाइयाँ	59
30.	लोकतंत्र और नैतिकता से जन्मी दोस्ती	61
31.	डोल्फ हिटलर की काली विरासत	63
32.	लियोन ट्रॉट्स्की को श्रद्धांजलि	65
33.	पूंजी की पुकार	67
34.	श्री नरेन्द्र मोदी को श्रद्धांजलि	69
35.	एडगर एलन पो के लिए स्तुति	71
36.	1857 का महान विद्रोह	73
37.	नेपाल में लोकतंत्र की जीत	75
38.	भगत सिंह को श्रद्धांजलि	77
39.	झांसी की रानी को श्रद्धांजलि	79
40.	कार्ल मार्क्स को श्रद्धांजलि	81
41.	द्रौपदी की स्तुति, साहस की रानी	83
42.	डिएगो माराडोना के लिए स्तुति	85
43.	विलियम शेक्सपियर के लिए ओड	87
44.	ताजमहलः एक कालातीत आश्चर्य	89
45.	कमला हैरिस के लिए शक्ति की कविता	91
46.	शेख हसीना के लिए शक्ति की प्रार्थना	93
47.	मोहनदास करमचंद गांधी को श्रद्धांजलि	95

48.	नेताजी सुभाष चंद्र बोस को श्रद्धांजलि	97
49.	बराक हुसैन ओबामा को श्रद्धांजलि	99
50.	जीवन की सिम्फनी	101

एक शिक्षक की विरासत

दो शिक्षक, एक पिता, एक माँ,
अद्वितीय मार्गदर्शन करते हैं।
ज्ञान के प्रकाश में, वे ऊँचे खड़े हैं,
मन का पोषण करते हैं, सभी को प्रेरित करते हैं।

उनके बच्चे, भाई और बहन, प्यारे,
प्यार और ज्ञान में, वे निकट आते हैं।
इतने शुद्ध और मुक्त दिलों से बंधे हुए,
सद्भाव से आकार लेने वाला एक परिवार।

आशीर्वाद इस विनम्र घोंसले को ताज पहनाए,
शांति और खुशी के साथ, उन्हें आशीर्वाद मिले।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर और भारत की बेटियों के लिए स्तुति

हे करुणा के पंडित, प्रकाश के दीप,
अज्ञान की रात से घिरे समय में,
आपने दुख, मौन निराशा देखी,
विधवाओं की आँखों में, उनका बोझ खुला हुआ था।

बंगाल की बहती नदियों की तरह विशाल हृदय के साथ,
आपने उनके सपनों को पोषित किया, किरणों को फिर से प्रज्वलित किया,
कफन और जंजीर से परे एक जीवन का,
जहाँ गरिमा ने दर्द पर विजय प्राप्त की।

भारत की बेटियों के लिए, जो बंधी हुई और अकेली थीं,
आपने एक रास्ता बनाया, जैसे पत्थर पर नदियाँ बहती हैं।
उनके हाथों में किताबें, उनके दिलों में उम्मीद,
आपने उन्हें अपनी भूमिका निभाने की ताकत दी।

हे विद्यासागर, अधिकारों के पिता,
अंधेरे घंटों में, आपने हमें नज़ारे दिखाए,
एक ऐसी दुनिया की जहाँ लड़कियाँ सपने देख सकती थीं और आज़ाद हो सकती थीं,
उनकी आत्माएँ बंधनमुक्त थीं, उनकी आत्माएँ उल्लास से भरी थीं।

हमारे देश की लड़कियों के लिए, जो भोर की तरह उठती हैं,
उनमें विद्यासागर का साहस जीवित रहे।
वे नदियों की तरह ऊँची उड़ान भरें, जो बहती हैं,
ज्ञान, सम्मान और एक घर की माँग करें।

हे पंडित, और जिन बेटियों को आपने बचाया,
हम आपके द्वारा इतनी बहादुरी से बनाए गए मार्ग का सम्मान करते हैं।
हर लड़की को अपने शांत तरीके से याद रखना चाहिए,
आपने जो विरासत छोड़ी है, वह आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है।

(माइकल मधुसूदन से प्रेरित)

जीवन का सपनाः एक आज़ाद पक्षी बनना

ओह, ज़मीन की सीमाओं से परे उड़ना,
खुले हाथों से बादलों को छूना।
पंखों को खोलना, दिल को इतना हल्का करना,
भोर को चूमना, रात को गले लगाना।

कोई पिंजरा नहीं, कोई बंधन नहीं,
हवा के झोंके में आज़ादी बहती है।
गहरी घाटियों और ऊँचे पहाड़ों के बीच,
आसमान के नीचे उड़ान का एक भजन।

चलने के लिए कोई सड़क नहीं, चढ़ने के लिए कोई दीवार नहीं,
सिर्फ़ हवा, एक फुसफुसाती कहानी।
सोने के खेत, समुद्र चौड़ा,
ज़िंदगी का एक सपना जहाँ सपने बसते हैं।

ओह, सूरज की धार पर नाचना,
ऐसे जीना जैसे दौड़ जीत ली हो।
एक बोझ से मुक्त आत्मा, एक झुकी हुई आत्मा,
जीवन का गान हमेशा जोर से गाया जाता है।

क्योंकि मैं पक्षी हूँ, और आकाश मेरी पुकार है,
स्वतंत्रता का स्वप्नदर्शी, सबसे महान।
मुझे अपने जीवन के अंत तक उड़ने दो,
सूर्य की किरणों में एक स्वतंत्र पक्षी का जीवन।

मृत्यु और विवाह के बीच क्या अजीब रिश्ता है

तुम्हारा पर्दा उठा, मेरा कफ़न खुल गया,
फूलों ने तुम्हें सजाया, जैसे उन्होंने मेरे रास्ते को सजाया था।
फिर भी अंत में, सब एक जैसा था,
जीवन की छोटी सी लौ में एक क्षणभंगुर नृत्य।

तुम खुशी से चले गए, मैं दुख से,
तुमने मार्च का नेतृत्व किया, मैंने खोखला पीछा किया।
तुमने घर की तलाश की, मैंने आसमान की तलाश की,
दोनों रास्ते अदृश्य संबंधों से चिह्नित थे।

उन्होंने तुम्हें सावधानी से उठाया, जैसे उन्होंने मुझे उठाया था,
दोनों को देखने के लिए दीपक चमकते थे।
भीड़ इकट्ठा हुई, मुस्कुराहट ने आंसुओं का सामना किया,
तुम्हारी प्रतिज्ञाएँ, मेरी खामोशी – दोनों ईमानदार।

वहाँ, वे हँसे; यहाँ, वे रोए,
दोनों के लिए पवित्र छंद रखे गए थे।
दो लपटें जलीं, एक तुम्हारी खुशी के लिए,
एक मेरी शांति के लिए, दोनों का मतलब विनाश करना था।

मिलन या बिछड़ने में, रेखाएँ धुंधली थीं,
जीवन की धुन गूंजी, फिर भी कोई भी विरोध नहीं किया।

तुमने अपने प्यार का दावा किया; मैंने अपनी रिहाई का दावा किया,
दोनों ने सांत्वना मांगी, दोनों ने शांति मांगी।

कितनी अजीब रिश्तेदारी है इन रस्मों को बांधती,
जीवन के दो छोर, फिर भी एक जैसे।

स्वर्ग की स्वप्निल लड़की

मुझे तुम्हारी याद आती है, स्वर्ग की गोद की स्वप्निल लड़की,
तुम्हारी आँखों में सितारे और एक देवदूत जैसा चेहरा।
मेरे दिल की रानी, इतनी कोमल, दिव्य,
चाँदनी की फुसफुसाहट में, तुम्हारी आत्मा आपस में जुड़ती है।

ईडन के सुंदर तट की आकर्षक लड़की,
धुनों जैसी हँसी के साथ, मैं तुम्हें और चाहता हूँ।
तुम्हारा स्पर्श एक भजन था, एक सुखदायक प्रतिध्वनि,
अब हवाओं में खो गया, मैं व्यर्थ पुकारता हूँ।

जहाँ तुम्हारे कदम पड़ते हैं, वहाँ गुलाब झुक जाते हैं,
यहाँ तक कि आसमान भी लाल रंग में शरमा जाता है।
एक दिव्य चमक, एक स्वप्न,
तुम्हारा प्यार मेरा खजाना था, सोने से भी अधिक मूल्यवान।

भले ही स्वर्ग तुम्हें मेरी बाहों से दूर रखे,
मैं गोधूलि के आकर्षण में तुम्हारी आत्मा को महसूस करता हूँ।
तुम सपनों में, रात के मखमली रंग में,
तुम्हारे लिए तरसते हुए मेरा दिल हमेशा धड़कता है।

हे, ग्लैमरस रानी, मेरी आत्मा की शाश्वत प्रार्थना,
एक दिन, स्वर्ग में, तुम मेरा इंतज़ार करो।
तब तक, मैं तुमसे प्यार करूँगा, समय और स्थान से परे,
स्वर्ग की मेरी सपनों की लड़की, मेरे दिल की पवित्र जगह।

(31 दिसंबर 2004 को लिखी गई एक पुरानी कविता का ताज़ा संस्करण, पौशाली देवी के लिए, जो 17 जनवरी, 2005 से मेरी दिल की धड़कन और पत्नी बन गई।)

जीवन का सपनाः एक आज़ाद पक्षी बनना

ओह, ज़मीन की सीमाओं से परे उड़ना,
खुले हाथों से बादलों को छूना।
पंखों को खोलना, एक ऐसा दिल जो इतना हल्का हो,
भोर को चूमना, रात को गले लगाना।

पकड़ने के लिए कोई पिंजरा नहीं, बाँधने के लिए कोई बंधन नहीं,
हवा के झोंके में आज़ादी बहती है।
गहरी घाटियों और ऊँचे पहाड़ों के बीच,
आसमान के नीचे उड़ान का एक भजन।

चलने के लिए कोई सड़क नहीं, चढ़ने के लिए कोई दीवार नहीं,
सिर्फ़ हवा, एक फुसफुसाती कहानी।
सोने के खेत, विशाल महासागर,
जीवन का एक सपना जहाँ सपने बसते हैं।

ओह, सूरज की धार पर नाचना,
ऐसे जीना जैसे दौड़ जीत ली हो।
एक बोझ से मुक्त आत्मा, एक झुकी हुई आत्मा,
जीवन का गान हमेशा ज़ोर से गाया जाता है।

क्योंकि मैं पक्षी हूँ, और आकाश मेरी पुकार है,
स्वतंत्रता का एक स्वप्नद्रष्टा, सबसे महान।
मुझे अपने जीवन के अंत तक उड़ने दो,
सूरज की किरणों में एक आज़ाद पंक्षी की ज़िंदगी

इचमाती के प्रेम की स्तुति

हे इचमाती, दिव्य नदी, इतनी गहरी,
मैंग्रोव हॉल के माध्यम से जहाँ रहस्य सोते हैं।
तुम्हारा पानी खारे आलिंगन में फुसफुसाता है,
जहाँ नमकीन और मीठा अपना मिलन स्थल पाते हैं।

बसीरहाट के तट पर, ज्वार हिलता है,
ताकी दिन के अंत तक भजन गाता है।
हुस्नाबाद तुम्हारी बहती धुन से गुनगुनाता है,
मॉडलहट चाँद के नीचे तुम्हारा स्वागत करता है।

हिलसा चाँदी की धाराओं में नृत्य करती है,
मछुआरे की खुशी, कवि के सपने।
बाघ झींगे गर्व से उछलते हैं,
तुम्हारे पानी में, जीवन की लय प्रज्वलित होती है।

शार्क तुम्हारी छायादार नसों में नीचे घूमते हैं,
मगरमच्छ अपनी शक्ति से मुक्त होकर सरकते हैं।
गोधूलि में सियार और लोमड़ी घूमते हैं,
तुम्हारे आलिंगन में, वे अपना घर पाते हैं।

मैंग्रोव प्रहरी की तरह ऊँचे उठते हैं,
हर तूफ़ान के खिलाफ़ प्रकृति का किला।
पक्षी उड़ान भरते हैं, एक सिम्फनी की शिखा,

आपकी कोमल लहरों पर, वे आराम करते हैं।

हे इच्छामती, आपका प्यार दूर तक बहता है,
चहल–पहल भरे शहरों और प्रकृति के गौरव के बीच।
एक कालातीत बंधन, एक भावपूर्ण भजन,
जीवन और प्रेम का, आपके भीतर का ज्वार।

अनंत ऋतुओं के माध्यम से, आपका दिल मज़बूती से धड़कता है,
दुनिया को अपने शाश्वत गीत में बाँधता है।
इच्छमती, आपका प्यार कायम रहेगा,
सुंदरता का खजाना, जंगली और शुद्ध।
दिनेश मजूदर, सोहराब हुसैन और
मदन चंद्र यहाँ पैदा हुए थे
आप, उनकी माँ की तरह हैं...
मदन चंद्र आपकी बेटी से प्यार करते हैं!
क्या आप बता सकते हैं कि वह वहाँ कौन है?

इचामती के प्रेम की स्तुति

हे इचामती, दिव्य नदी, इतनी गहरी,
मैंग्रोव हॉल के माध्यम से जहाँ रहस्य सोते हैं।
तुम्हारा पानी खारे आलिंगन में फुसफुसाता है,
जहाँ नमकीन और मीठा अपना मिलन स्थल पाते हैं।

बशीरहाट के तट पर, ज्वार हिलता है,
ताकी दिन के अंत तक भजन गाता है।
हुस्नाबाद तुम्हारी बहती धुन से गुनगुनाता है,
मॉडलहट चाँद के नीचे तुम्हारा स्वागत करता है।

हिलसा चाँदी की धाराओं में नृत्य करती है,
मछुआरे की खुशी, कवि के सपने।
बाघ झींगे गर्व से उछलते हैं,
तुम्हारे पानी में, जीवन की लय प्रज्वलित होती है।

शार्क तुम्हारी छायादार नसों में नीचे घूमते हैं,
मगरमच्छ अपनी शक्ति से मुक्त होकर सरकते हैं।
गोधूलि में सियार और लोमड़ी घूमते हैं,
तुम्हारे आलिंगन में, वे अपना घर पाते हैं।

मैंग्रोव प्रहरी की तरह ऊँचे उठते हैं,
हर तूफ़ान के खिलाफ़ प्रकृति का किला।
पक्षी उड़ान भरते हैं, एक सिम्फनी की शिखा,

आपकी कोमल लहरों पर, वे आराम करते हैं।

हे इच्छामती, आपका प्यार दूर तक बहता है,
चहल–पहल भरे शहरों और प्रकृति के गौरव के बीच।
एक कालातीत बंधन, एक भावपूर्ण भजन,
जीवन और प्रेम का, आपके भीतर का ज्वार।

अनंत ऋतुओं के माध्यम से, आपका दिल मज़बूती से धड़कता है,
दुनिया को अपने शाश्वत गीत में बाँधता है।
इच्छमती, आपका प्यार कायम रहेगा,
सुंदरता का खजाना, जंगली और शुद्ध।
दिनेश मजूदर, सोहराब हुसैन और मदन चंद्र यहाँ पैदा हुए थे
आप, उनकी माँ की तरह हैं...
मदन चंद्र आपकी बेटी से प्यार करते हैं!
क्या आप बता सकते हैं कि वह वहाँ कौन है?

आवास ऋण डिफॉल्टर की शिकायत

इन ईंटों के नीचे, मेरे सपने बसते हैं,
एक आश्रय की तलाश, जहाँ उम्मीद टिकी हो।
लेकिन अब दीवारें जो कभी ऊँची थीं
एक बोझ की तरह लगती हैं, गिरने वाली हैं।

कागज़ातों पर उत्सुकता से हस्ताक्षर किए गए,
एक वादा जो रेत पर किया गया।
ऋणदाता मुस्कुराया, भविष्य उज्ज्वल था,
लेकिन खामोश रात में छायाएँ बढ़ती गईं।

महीने बीत गए, बकाया राशि जमा हो गई,
जीवन के क्रूर हाथों ने ऋण नवीनीकृत कर दिए।
मेरी नौकरी अब समय के साथ चली गई,
और हर सिक्का एक अपराध की तरह लगता है।

हे मेरे घर, मेरे पवित्र स्थान,
तुम अब अपने क्रूर आलिंगन से मेरा मज़ाक उड़ाते हो।
ऋणदाता की पुकार, एक भयावह धुन,
अंधेरे दोपहर में गूँजती है।

मेरे दिल में कोई दुर्भावना नहीं है,
फिर भी भाग्य ने मेरे सपनों को तोड़ दिया है।
हर ईंट जो मैंने प्यार और देखभाल के साथ रखी थी,
अब निराशा की निगाहों के नीचे काँपती है।

मैं संख्याएँ नहीं हूँ, ठंडी और निश्चल,
मैं एक आत्मा हूँ, अंधेरे में खोई हुई।
मैं उन दिलों से विनती करती हूँ जो सुनते हैं,
दया को जगाओ, और मुझे अपने पास लाओ।

क्योंकि घर दीवारों और पत्थरों से कहीं बढ़कर हैं,
वे जीवन को पालते हैं, वे हमें पहचान दिलाते हैं।
यह सब खो देने से मेरा दिल टूट जाएगा,
मैं फिर से एक घुमक्कड़ बन जाऊँगा।

हरिचरण मुखर्जी की स्तुति

हे हरिचरण, मन और हृदय के स्वामी,
संदेशखली की विनम्र गलियों में आपने शिक्षा दी,
सावधानी और प्राचीन कलाओं से बुनी गई बुद्धि,
आपके कोमल हाथों से, युवा आत्माएँ पकड़ी गईं।

आप अब समय के इस दायरे में नहीं हैं,
फिर भी आपकी आवाज़ की गूँज बनी हुई है,
एक गहन राग, एक सूक्ष्म कविता,
असंख्य आत्माओं का मार्गदर्शन करती हुई, दृढ़ और शुद्ध।

आपकी निगाह में, कोमल पौधे उग आए,
शक्तिशाली ओक के पेड़ों में, मजबूत और सच्चे,
क्योंकि आपने उनमें बीज बोए,
ज्ञान के, सद्गुणों के, और नेक कामों के।

आपका नाम, धन्यवाद की एक फुसफुसाती हुई प्रार्थना,
अब बिखरे हुए छात्रों से, पंक्तियों पर पंक्तियाँ,
वे निर्माण करते हैं, वे नेतृत्व करते हैं, वे उठाते हैं, वे साझा करते हैं,
प्रेम के पाठ, उपहार इतना दुर्लभ।

न तो संगमरमर की कोई प्रतिमा, न ही कोई ऊंची मूर्ति,
आपकी दी हुई भावना को पकड़ सकती है,

आपकी विरासत के लिए, एक हॉल से परे,
आपके शिष्यों द्वारा चले गए हर रास्ते में रहती है।

हे महान हरिचरण, यद्यपि आप चले गए हैं,
आपका दीपक हर भोर में जलता रहता है।

एक बूढ़े शेर की शिकायत निवारण

एक बार की बात है, सिंहवन के विशाल जंगलों में शेरस नाम का एक बूढ़ा शेर राज करता था। अपनी युवावस्था में शेरस एक दुर्जेय शक्ति था, जो गर्व और निष्पक्षता के साथ जंगल पर शासन करता था। उसकी दहाड़ से ही हर प्राणी की रीढ़ में सिहरन दौड़ जाती थी और छोटे से खरगोश से लेकर विशालकाय हाथी तक सभी उसकी बुद्धि की खोज में रहते थे।

लेकिन समय, एक बेरहम नदी की तरह, बड़े से बड़े राजा को भी नहीं छोड़ता। शेरस बूढ़ा हो गया, उसका कभी सुनहरा माने वाला अयाल अब भूरे रंग का हो गया था और उसकी शक्तिशाली दहाड़ पहले की तरह फुसफुसाहट में बदल गई थी। जो जानवर कभी उसके प्रति समर्पित थे, अब उसकी ओर कम ध्यान देते थे। अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए उत्सुक छोटे शेरों ने उसके अधिकार को चुनौती देना शुरू कर दिया।

निराश और उपेक्षित महसूस करते हुए, शेरस ने एक महान परिषद बुलाने का फैसला किया। उसने जंगल के सभी प्राणियों को संदेश भेजा, उन्हें अपनी शिकायतें सुनने के लिए आमंत्रित किया और इस बात पर चर्चा की कि सिंहवन की शांति कैसे संरक्षित की जा सकती है।

परिषद के दिन, सभी आकार के जानवर प्राचीन बरगद के पेड़ के चारों ओर इकट्ठा हुए, जो परिषद की पारंपरिक बैठक स्थल था। पक्षी इसकी शाखाओं पर बैठे थे, उत्सुकता से चहचहा रहे थे; हिरण और मृग झुंड में खड़े थे, उनके कान फड़क रहे थे; और छोटे शेर पृष्ठभूमि में घूम रहे थे, उनकी आँखें महत्वाकांक्षा से चमक रही थीं।

"मेरी बात सुनो दोस्तों," शेरस ने शुरू किया, उसकी आवाज़ में उस शक्ति का संकेत था जो कभी उसके पास थी। "सालों से, मैंने इस जंगल पर न केवल ताकत से बल्कि न्याय के साथ

शासन किया है। फिर भी अब, अपने बुढ़ापे में, मैं खुद को भूला हुआ पाता हूँ, मेरी बुद्धि की अवहेलना की जाती है, और सिंहवन की शांति कलह से खतरे में है।"

भीड़ में एक बड़बड़ाहट गूंज उठी। ज़र्रान नामक एक साहसी युवा शेर, जो अपनी अधीरता के लिए जाना जाता है, आगे बढ़ा। "सम्मान के साथ, हे शेरस, तुम्हारा समय बीत चुका है। जब भविष्य युवाओं का है, तो हम एक बूढ़े राजा की बात क्यों मानें?"

शेरस के जवाब देने से पहले, मंडक नामक एक बुजुर्ग कछुआ बोला। उसने अनगिनत मौसम देखे थे और राजाओं को उठते–गिरते देखा था। "ज़र्रान, ताकत और जवानी क्षणभंगुर हैं, लेकिन बुद्धि हमारे जंगल का सच्चा आधार है। अगर हम उन लोगों के ज्ञान को नकारते हैं जो पहले आए थे, तो हम उनकी गलतियों को दोहराने का जोखिम उठाते हैं।"

मंडक के शब्दों से प्रभावित होकर, अन्य जानवरों ने सहमति में सिर हिलाया। यहाँ तक कि ज़र्रान की नज़र भी नरम पड़ गई। चुर्मी नाम का एक जीवंत तोता आगे बढ़ा और कहा, ''शेरस को हमारा सलाहकार बनने दो, एक ऋषि जो हमें आगे बढ़ने में मार्गदर्शन करे। इस तरह, हम अतीत और वर्तमान दोनों का सम्मान करेंगे।''

परिषद ने स्वीकृति के साथ गूंज की, और शेरस ने कृतज्ञता से भरी आँखों से सिर हिलाया। ''मैं अब तुम्हारा राजा नहीं रह सकता, लेकिन मैं हमेशा अपना ज्ञान साझा करने के लिए यहाँ रहूँगा। चलो एक ऐसा रास्ता बनाते हैं जहाँ पुराना और नया एक साथ चलते हैं।''

और इस तरह सिंहवन की शांति बनी रही, शेरस के मार्गदर्शन ने यह सुनिश्चित किया कि भविष्य के शासक न केवल शक्ति के साथ नेतृत्व करें, बल्कि अतीत के सबक को हमेशा दिल के करीब रखें।

तूफ़ान का सामना किया

लंबी, ठंडी रात की शांति में,
जहाँ कभी प्यार की गूँज इतनी कसी हुई थी,
एक विधुर गहरी यादों के साथ बैठा है,
अपने दिल में सुरक्षित राज़ रखता है।

घर, हँसी के गीत की छाया,
खोखले कमरे जहाँ पल होते हैं।
पुरानी मुस्कुराहटों से सजी तस्वीरें,
खुशी के भूत जो अब नहीं दस्तक देते।

वह हवा की कोमल गुनगुनाहट में उसकी आवाज़ सुनता है,
उन दिनों की फुसफुसाहट जब सपने आते थे,
जब हाथ में हाथ डालकर वे तूफ़ान का सामना करते थे,
प्यार का आलिंगन, इतना मज़बूत, इतना गर्म।

लेकिन अब, मौन अपना भार उठाता है,
समय एक चोर है, अपने भाग्य में क्रूर।
हर टिक खोखले दर्द की ढोल की थाप है,
हर भोर नुकसान के शासन की याद दिलाती है।

फिर भी दुख के बीच, एक चिंगारी बनी हुई है,
एक जिद्दी अंगारा, जंजीरों को चुनौती देता है।
क्योंकि अंधेरे में, आशा उग सकती है,
थकी हुई आँखों के नीचे एक झिलमिलाहट।

''वह चाहती है कि मैं खड़ा रहूँ,'' वह धीरे से प्रार्थना करता है,
''छायादार रास्तों से रास्ता ढूँढ़ने के लिए।
उसकी आत्मा जीवित है, हालाँकि वह अलग है,
मेरे दिल के भीतर एक मार्गदर्शक लौ है।''

इसलिए कदम दर कदम, हालाँकि धीमे, अनिश्चित,
वह प्रकाश, छोटे, शुद्ध की तलाश करता है।
क्योंकि हालाँकि यात्रा कठिन और लंबी है,
उसका प्यार, अदृश्य, अभी भी उसे मजबूत बनाए रखता है।

बाल दिवस पर वयस्क बच्चे

बाल दिवस, एक प्रिय प्रकाश,
जहाँ हँसी नाचती है, दिल उड़ान भरते हैं।
फिर भी, हम बड़े हो गए हैं, उम्र और कर्म में,
अभी भी भीतर, एक बच्चा है जिसे हम पालते हैं।

ओह, बीते दिनों के सच्चे दोस्त,
हम सुबह की ओस में खेलते थे, दौड़ते थे।
गड्ढों में कागज़ की नावें तैरती थीं,
छोटे हाथ जो कभी नहीं थकते थे।

हमारे बचपन की खुशी की गूँज,
पुराने ओक के पेड़ से गूंजती हुई,
हमें इस खास सुबह की याद दिलाती है,
जब सपने पैदा होते थे तब की खुशी।

अब झुर्रियों के साथ, ज्ञान के स्पर्श के साथ,
हम याद करते हैं, शायद बहुत ज़्यादा।
फिर भी आत्मा के अछूते मूल में,
बच्चा हमेशा के लिए जीवित रहता है।

तो, दोस्तों जो जीवन की कठोर परीक्षा के साथ बड़े हुए हैं,
आज, आइए रुकें और अपना सर्वश्रेष्ठ महसूस करें।
चलो हँसते हैं, खेलते हैं, जैसे बच्चे करते हैं,
और उस मासूमियत को फिर से जगाते हैं।

क्योंकि बाल दिवस सिर्फ़ उनका नहीं है,
यह उस दिल के लिए है जो वाकई हिम्मत रखता है,
युवा बने रहने के लिए, नाचने और गाने के लिए,
जीवन और हर चीज़ को संजोने के लिए।

मेरा हाथ थाम लो, प्यारे दोस्त इतने पास,
चलो हवा का पीछा करते हैं, डर को छोड़ देते हैं।
क्योंकि हर वयस्क के भीतर, बच्चे जैसा और खुशमिजाज़,
एक दोस्त रहता है जो कभी नहीं भटकेगा।

तो यहाँ हम हैं, बड़े होकर भी छोटे,
उन यादों के साथ जो अभी भी रोमांचित करती हैं।
बाल दिवस पर, आइए हम शपथ लें कि हम,
ऐसे दोस्त बनेंगे जो अपने अंदर बच्चे को पाएँ।

बीमार बच्चा

शांत कमरे में, कोमल और स्थिर,
एक छोटा बच्चा लेटा है, इतना नाजुक, इतना बीमार।
कभी चमकीली आँखें अब धीरे से बंद हो जाती हैं,
जहाँ ठंडी हवा चलती है, वहाँ सपने बहते हैं।

हाथ जो कभी आसमान की ओर बढ़ते थे,
अब धीरे से मुड़ते हैं, जैसे बुखार उड़ जाता है।
एक फुसफुसाती हुई आह, एक दबी हुई आवाज़,
ऐसी लड़ाइयों में जहाँ कोई जयकार नहीं गूंजती।

थकी हुई रोशनी में पढ़ी गई कहानियाँ,
रात की गहराई में गाए गए गीत।
कंबल की तह में कसकर सिली गई उम्मीदें,
प्यार से गर्म, साहसपूर्वक बुनी गई।

सूरज सुनहरी कृपा के साथ झाँकता है,
पीले चेहरे पर एक कोमल स्पर्श।
छोटी साँसें, एक स्थिर लड़ाई,
दिन–रात डटे रहना।

पंखुड़ियों की तरह प्रार्थनाएँ गिरती और उठती हैं,
आँसू भरी आँखों में कामनाएँ।
प्रिय हृदय, इतने गहरे सपनों में विश्राम करो,
जहाँ दर्द के लिए कोई जगह नहीं है, और फ़रिश्ते रोते हैं।

सुंदरबन के सुदूर गाँव में बाघ की दहाड़ का सार

सुंदरबन के दिल में, जंगली और विशाल,
जहाँ मैंग्रोव नाचते हैं और छायाएँ पड़ती हैं,
एक गाँव गर्म, घनी हवा में सोता है,
जैसे वहाँ डर की फुसफुसाहटें चुपके से आती हैं।

चाँद नीचे लटका हुआ है, एक चांदी जैसी आँख,
ज्वार को उठते, पीछे हटते और आहें भरते हुए देख रहा है।
रात का पर्दा काँपती हुई ज़मीन पर ढँक जाता है,
जब अचानक—वह आता है, बिना किसी योजना के।

एक गहरी दहाड़ खामोश अँधेरे को चीरती है,
एक भयंकर गीत, एक ज्वलंत चिंगारी।
बाघ की आवाज़, कच्ची और भव्य,
सम्मान की माँग करती है, एक मौन रुख।

बच्चे अपने सपनों में चौंक जाते हैं,
माँओं का दिल तेज़ी से धड़क उठता है।
पिता नज़रें मिलाते हैं, लालटेन कसकर थामे हुए हैं,
आँखें काँपती रात को चीरती हैं।

प्रकृति का शासक, अपने पंजों के साथ इतना पक्का,
अपने राज्य में घूमता है, विशाल और शुद्ध।
काँटेदार झाड़ियों की छाया के साथ मिलती धारियाँ,
एक राजा का रास्ता जो किसी ने नहीं बनाया।

गाँव विस्मय में अपनी साँस रोक लेता है,
भाग्य, दाँत और पंजे से अवगत।
फिर भी, दहाड़ में, एक बंधन इतना गहरा है,
जंगली और मनुष्य की यादें बनी हुई हैं।

सूर्योदय आशा की फुसफुसाहट करता है, गर्म और धीमा,
जैसे मुर्गे की बाँग के साथ डर फीका पड़ जाता है।
लेकिन सुंदरबन की विद्या के दिल में,
हमेशा बाघ की दहाड़ गूंजती है।

एक सुदूर गाँव में एक असफल कम्युनिस्ट का व्यक्तिगत दुःख

एक ऐसे गाँव में जहाँ धरती सूखी है,
और सपने जलते हुए आसमान की ओर बहते हैं,
एक अकेला आदमी पुरानी, टूटी हुई दीवार के पास बैठा है,
जहाँ लाल झंडों की छायाएँ गिरती हैं।

एक बार, उसकी आवाज़ ने खेत को हिला दिया था,
हथौड़े की धार की तरह तीखे वादों के साथ।
आँखें जल रही थीं, मुट्ठियाँ ऊँची उठी हुई थीं,
एक उम्मीद भरे झूठ में रंगे सपने।

लेकिन मौसम बदल गया, और फसलें कम रह गईं,
बाहर की दुनिया ने घूमने से इनकार कर दिया।
भाई जो कभी दृढ़, एकजुट होकर खड़े थे,
समय की लहरों की तरह चुप हो गए।

अब गाँव थकी हुई साँसों के साथ फुसफुसाता है,
परिवर्तन की नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु की।
बच्चे धूल भरी सड़क पर खेलते हैं,
जबकि एक आदमी अधूरा देखता है।

उसके आदर्श बिखरी हुई मिट्टी में पड़े हैं,
मंत्र, मार्च बह गए।
झुर्रीदार हाथ, मेहनत से जख्मी,
बंजर मिट्टी में बीज पलटते हैं।

''क्या मैंने उन्हें निराश किया, या उम्मीद भाग गई,
प्यासे समुद्र में खोई नदी की तरह?''
रैलियों की गूँज अभी भी उसकी नींद में बाधा डालती है,
संघर्ष के गीत, अब घाव जो रोते हैं।

फिर भी गोधूलि में, जब आकाश लाल हो जाता है,
वह कारण को याद करता है, हालांकि ठंडा और मृत।
एक झिलमिलाहट बनी हुई है, उसकी छाती में गहरी,
न्याय के लिए एक प्यार जो आराम नहीं पाता।

क्योंकि नुकसान में भी, आत्मा बनी रहती है,
शांत, भूले हुए रास्तों में।
एक आह, एक नज़र, एक फुसफुसाए शब्द में,
एक विश्वास जो टूटा नहीं है, हालांकि अनसुना है।

सुंदरबन के जंगल में भोर

रात गहरी और अंधेरी आहें भरती है,
जैसे मैंग्रोव की छायाएँ सो जाती हैं।
एक सन्नाटा पत्तियों और जानवरों पर भारी पड़ता है,
एक पल का विराम, एक संयमित दावत।

फिर धीरे–धीरे, धीरे–धीरे, दुनिया बदल जाती है,
जैसे सुबह की रोशनी उठनी शुरू होती है।
सबसे पहले, पानी के गिलास पर एक लालिमा,
जहाँ धाराएँ गुजरती हैं वहाँ सोना लहराता है।

पक्षी हलचल करते हैं, फड़फड़ाते हैं, और गाते हैं,
पंखों पर नाचते हुए नोट।
मैंग्रोव पन्ना रंग में जागते हैं,
ओस में नहाए हुए, सुरागों में भीगे हुए।

एक बाघ की जम्हाई, धीमी और लंबी,
तोते के गीत के साथ मिल जाती है।
केकड़े भागते हैं, उनके पंजे जलते हैं,
सूरज के पहले स्पर्श में, बिना नाम के।

मछुआरे उठते हैं, हाथ में जाल लिए,
समुद्र और रेत से बंधी आशा।
उनकी नावें रहस्य की बातें फुसफुसाती हैं,
जैसे पैडल तरल सोने में गोते लगाते हैं।

हवा आती है, ठंडी और मीठी,
मिट्टी और पीट की खुशबू के साथ।
पत्तियाँ कोमल अनुग्रह से काँपती हैं,
जैसे भोर अपना कोमल आलिंगन प्रकट करती है।

यहाँ, सुंदरबन की सुबह में,
जंगली और पालतू दोनों का पुनर्जन्म होता है।
हर धड़कन, पुकार और साँस,
जीवन की चिरस्थायी खोज का हिस्सा।

और जैसे–जैसे प्रकाश ऊँचा और गर्व से चढ़ता है,
बादलों के आखिरी टुकड़ों को हटाता है,
जंगल गुनगुनाता है, जीवंत, गहरा,
एक गहरा कोरस, एक पवित्र ध्वनि।

हिरण की प्यास

भूरे और हरे रंग की झाड़ियों के बीच,
जहाँ सूरज की रोशनी बिखरती है और छायाएँ झुकती हैं,
एक हिरण धीरे–धीरे कदम बढ़ाता है, कान ऊँचे रखता है,
आसमान के नीचे पानी की तलाश करता है।

धरती फटी हुई है, हड्डी की तरह सूखी है,
बहुत समय से उखड़ी हुई धाराओं की गूँज।
पत्ते फुसफुसाते हैं, भंगुर और पतले,
जैसे आशा भीतर से प्यास से लड़ती है।

आँखें चौड़ी, ज़रूरत के काले तालाब,
जंगल की शांत विनती को दर्शाते हैं।
नासिकाएँ एक निशान पकड़ने के लिए फैलती हैं,
ठंडी राहत की, एक छिपी हुई जगह की।

दूर की एक धारा, पास में एक वादा,
धीमी और स्पष्ट संगीत के साथ बुलाता है।
हिरण चलता है, मांसपेशियाँ कसी हुई,
अंतर्ज्ञान से प्रेरित, दिल जलता हुआ।

काँटेदार रास्तों और सुनहरे ग्लेड्स के माध्यम से,
जहाँ प्रकाश और अंधकार लटों में बुने हुए हैं,
आखिरकार यह नदी के किनारे आता है,
जहाँ चाँदी का पानी बहता और बहता है।

धीरे–धीरे सांसें भरते हुए,
सुबह की रोशनी में प्यास बुझाते हुए।
जंगल आहें भरता है, एक रहस्य छिपा हुआ है,
जैसे हिरण, संतुष्ट होकर, कदम बढ़ाता है।

क्योंकि उस पल में, शांत और छोटा,
एक साधारण पेय सब कुछ पार कर जाता है।
प्रकृति की कला में जीवन का नवीनीकरण,
हर दिल में एक लय महसूस होती है।

स्वर्ग की स्वप्निल लड़की

मुझे तुम्हारी याद आती है, स्वर्ग की गोद की स्वप्निल लड़की,
तुम्हारी आँखों में सितारे और एक देवदूत जैसा चेहरा।
मेरे दिल की रानी, इतनी कोमल, दिव्य,
चाँदनी की फुसफुसाहट में, तुम्हारी आत्मा आपस में जुड़ती है।

ईडन के सुंदर तट की आकर्षक लड़की,
धुनों जैसी हँसी के साथ, मैं तुम्हें और चाहता हूँ।
तुम्हारा स्पर्श एक भजन था, एक सुखदायक प्रतिध्वनि,
अब हवाओं में खो गया, मैं व्यर्थ पुकारता हूँ।

जहाँ तुम्हारे कदम पड़ते हैं, वहाँ गुलाब झुक जाते हैं,
यहाँ तक कि आसमान भी लाल रंग में शरमा जाता है।
एक दिव्य चमक, एक स्वप्न,
तुम्हारा प्यार मेरा खजाना था, सोने से भी अधिक मूल्यवान।

भले ही स्वर्ग तुम्हें मेरी बाहों से दूर रखे,
मैं गोधूलि के आकर्षण में तुम्हारी आत्मा को महसूस करता हूँ।
तुम सपनों में, रात के मखमली रंग में,
तुम्हारे लिए तरसते हुए मेरा दिल हमेशा धड़कता है।

हे, ग्लैमरस रानी, मेरी आत्मा की शाश्वत प्रार्थना,
एक दिन, स्वर्ग में, तुम मेरा इंतज़ार करो।
तब तक, मैं तुमसे प्यार करूँगा, समय और स्थान से परे,
स्वर्ग की मेरी सपनों की लड़की, मेरे दिल की पवित्र जगह।

(31 दिसंबर 2004 को लिखी गई एक पुरानी कविता का ताज़ा संस्करण,
पौशाली देवी के लिए, जो 17 जनवरी 2005 से मेरी दिल की धड़कन और पत्नी बन गई।)

कौरवों की माता गांधारी की स्तुति

हे गांधारी, दुःख और कृपा की माता,
तुम्हारा हृदय एक नदी की तरह था, एक अँधेरे स्थान में।
अंधकार में बंधी आँखों से, तुमने देखना चुना,
अपने पुत्रों की पीड़ा, जब वे स्वतंत्र होना चाहते थे।

एक ऐसे राज्य में जन्मी, जो इतना समृद्ध और इतना भव्य था,
लेकिन भाग्य ने एक क्रूर, भारी हाथ घुमाया।
क्योंकि तुमने अपने स्वामी का सम्मान करने के लिए अपनी दृष्टि त्याग दी,
प्रेम का बलिदान, जिसका कोई प्रतिफल नहीं मिला।

युद्ध के कक्षों में, रात के सन्नाटे में,
तुमने एक माँ की दुर्दशा का भार उठाया।
तुम्हारा हृदय आशा से धड़कता था, फिर भी दुःख बढ़ता गया,
क्योंकि कलह के बीज बोने लगे थे।

तुमने अपने हृदय में प्रेम के साथ सौ पुत्रों को जन्म दिया,
लेकिन भाग्य के क्रूर हाथ ने उन्हें अलग कर दिया।
कौरव, तुम्हारे बच्चे, महत्वाकांक्षा से बंधे हुए,
उनका जीवन एक दुखद स्थिति में एक दूसरे से जुड़ा हुआ था।

तुम्हारी आँखें, भले ही ढकी हुई थीं, फिर भी
तुम्हारे परिवार का दर्द, उनके द्वारा विश्वास किए जाने वाले झूठ को समझ सकती थीं।
कुरुक्षेत्र के युद्ध में, जहाँ खून बहा था,
तुम अपने बेटों के लिए रोई थीं, जिनकी नियति पूरी हो चुकी थी।

युद्ध की आवाज़ें, मारे गए लोगों की चीखें,
तुम्हारे लिए खंजर की तरह थीं, जो अंतहीन दर्द देती थीं।
फिर भी, अपनी चुप्पी में, अपने इतने गहरे दुख में,
तुमने शांति के लिए प्रार्थना की, तुमने दुनिया से रोने की भीख माँगी।

हे गांधारी, माँ, संघर्ष का हृदय,
तुमने एक राज्य के जीवन की पीड़ा को सहन किया।
तुम्हारे दुख में, तुमने एक गहन ज्ञान धारण किया,
क्योंकि अराजकता के बावजूद, तुम्हारे प्रेम की कोई सीमा नहीं थी।

तुम्हारा दुख एक नदी था, एक अविरल प्रवाह,
जब तुम अपने बेटों के लिए विलाप कर रही थी, जिन्हें तुम दुख से नहीं बचा सकी।
फिर भी, तुम्हारे दिल में, एक प्रेम अभी भी जल रहा था,
एक माँ की लौ, हमेशा के लिए अनबुझी हुई।

हे गांधारी, तुम्हारी कहानी साहस और पीड़ा की है,
प्यार की कहानी जो दाग के बावजूद कायम है।
इतिहास के पन्नों में तुम्हारा नाम दर्ज होगा,
एक माँ जिसने खंडित भूमि में प्यार किया।

शेख हसीना के लिए शक्ति की प्रार्थना

हे जनता की नेता, मजबूत और सच्ची,
दुख का बोझ आप पर है।
दुख की लहरों के बीच आपका दिल बहता है,
फिर भी आपकी आँखों में आँसू नहीं हैं।

क्योंकि आपकी आत्मा में अभी भी एक आग जलती है,
साहस की एक लौ जो कभी नहीं बुझती।
हालाँकि नुकसान हुआ है, इतना गहरा, इतना व्यापक,
आपकी आत्मा खड़ी है, एक राष्ट्र का गौरव।

दुख की छाया में, आपकी शक्ति बढ़ेगी,
जैसे सूरज सबसे गहरे आसमान को चीरता है।
आप उन लोगों की यादें लेकर चलते हैं जिन्हें आपने खो दिया है,
लेकिन आपका दिल, प्यारी हसीना, नहीं डगमगाएगा।

आप जिस रास्ते पर चल रहे हैं, हालाँकि वह खड़ी और लंबी है,
प्यार, और उम्मीद, और गीत द्वारा निर्देशित है।
क्योंकि आपके दुख में, आप अकेले नहीं हैं,
बांग्लादेश के लोग आपको अपना घर कहते हैं।

शांति की हवाएँ आपकी आत्मा को ऊपर उठाएँ,
जैसे आप दर्द को ठीक करते हैं, और उसे पूरा करते हैं।
हालाँकि रास्ता उबड़–खाबड़ है और बोझ भारी है,
तुम शालीनता से चलते हो, जहाँ फ़रिश्ते चलते हैं।

हर आँसू और हर आह के ज़रिए,
तुम हम सबको आसमान तक पहुँचने का तरीका सिखाते हो।
हे हसीना, तुम्हारा दिल अनकही ताकत से धड़कता है,
साहस, दृढ़ और निडर की विरासत।

अंधेरे पलों में, इस सच्चाई को याद रखो,
प्यार की रोशनी तुम्हारी जवानी को नया कर देगी।
और अतीत की फुसफुसाहटों में, तुम सुनोगे,
उन लोगों की आवाज़ें जिन्हें तुम प्यार करते हो।

इसलिए दुख से ऊपर उठो, इसे परिभाषित न होने दो,
क्योंकि तुम्हारा साहस और दिल हमेशा चमकता रहेगा।
समय हमेशा की तरह उपचार लाए,
तुम्हारी प्यारी हसीना, प्यार की निशानी हो।

द्रौपदी की स्तुति, साहस की रानी

हे द्रौपदी, भाग्य के महलों में,
जहाँ राजा और योद्धा बहस करने के लिए मिलते हैं,
तुम शालीनता से खड़ी थी, तुम्हारी आँखों में आग थी,
एक रानी, एक महिला, जो उग्र और बुद्धिमान दोनों थी।

अग्नि से जन्मी, तुम्हारा भाग्य स्पष्ट था,
शक्ति, आशा और भय का प्रतीक।
युद्ध के मध्य में, तुमने अपना पक्ष रखा,
अडिग साहस के साथ, तुम्हारी इच्छाशक्ति की मांग थी।

जब पासे फेंके गए, और दरबार शांत था,
तुमने अपनी पीड़ा का सामना बेजोड़ इच्छाशक्ति के साथ किया।
शर्म के महल में, जब सब कुछ खो गया लग रहा था,
तुम्हारी गरिमा बढ़ी, चाहे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

अपमान के सामने, निराशा के सामने,
तुमने बिना किसी प्रार्थना के न्याय का आह्वान किया।
तुम्हारी पुकार सत्य के उत्थान के लिए एक दलील थी,
खुले आसमान में देवताओं के लिए एक वसीयतनामा।

हे धरती की बेटी, हे पवित्र बहन,
तुम्हारी आत्मा ने सहन किया, इस बात का हमें यकीन है।
विश्वासघात के दरबार में, नफरत के तूफान में,
तुम निडर खड़ी रही, भाग्य को चुनौती देती रही।

जीवन की परीक्षाओं में, आग और खून के बीच,
तुम कभी झुकी नहीं, तुम कभी झुक नहीं सकती।
क्योंकि तुम्हारे दिल में वीरता की आग जलती थी,
एक वीर महिला, जो कभी गुलाम नहीं बनी।

हे द्रौपदी, इतने बड़े दिल वाली रानी,
तुम्हारा नाम पूरे देश में एक प्रकाश स्तंभ है।
तुम्हारी परीक्षाओं में, तुम्हारे दर्द में, तुम्हारी अनंत कृपा में,
तुम हमें खड़े रहना सिखाती हो, चाहे कोई भी जगह हो।

महिलाओं की गरिमा के लिए, न्याय के लिए,
तुमने बहुतों, कुछ लोगों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।
एक शाश्वत विरासत, शक्ति और गौरव की,
सम्मान की लड़ाई में, तुम हमारे साथ खड़ी हो।

शिवाजी महाराज की स्तुति

हे शिवाजी, योद्धा, भूमि के सिंह,
अपनी मुट्ठी में तलवार और अपने हाथ में भाग्य लिए।
आप उस मिट्टी से उठे, जहाँ मराठों का जन्म हुआ,
एक दूरदर्शी राजा, एक अखंड आत्मा।

पहाड़ियों और घाटियों में, रात के सन्नाटे में,
आपने वीरता और पराक्रम के साथ एक राज्य बनाया।
स्वतंत्रता की हवाओं को आपने अनदेखा नहीं किया,
क्योंकि आपने भारत के तट की महिमा की तलाश की।

हर लड़ाई के साथ, हर कदम के साथ,
आपने सम्मान का झंडा गर्व के साथ उठाया।
ऊँचे किलों से लेकर नीचे की नदियों तक,
आपके नाम ने डर पैदा किया, आपका साहस चमक उठा।

न केवल एक योद्धा, बल्कि एक बहुत बुद्धिमान नेता,
एक शुद्ध हृदय और आपकी आँखों में सच्चाई।
आपने लोगों को, भूमि को अपने नाम पर एकजुट किया,
और एक विरासत, एक शाश्वत ज्वाला का निर्माण किया।

हिन्दवी स्वराज्य का आपका दृष्टिकोण, इतना साहसिक,
स्वतंत्रता का एक सपना, कहानियों में।
आपकी नज़र में, एक राष्ट्र, मज़बूत और आज़ाद,
एक गौरवशाली भविष्य, जिसे सभी देख सकते हैं।

आप अत्याचार के खिलाफ़, अत्याचारी शासन के खिलाफ़ खड़े हुए,
आपकी लड़ाई न्याय के लिए थी, लोगों के दर्द को कम करने के लिए।
दुश्मन के सामने, आपने कभी हार नहीं मानी,
क्योंकि शिवाजी का दिल कभी भी सील नहीं किया जा सकता था।

हे शिवाजी, शेर, आपकी विरासत ज़िंदा है,
हर बहादुर आत्मा में, हर दिल में जो देता है।
आपकी आत्मा आज़ाद की भूमि में टिकी हुई है,
ताकत की एक किरण, जिसे सभी देख सकते हैं।

सद्भाव के लिए प्रार्थना

ओ रंगों की दुनिया, इतनी विशाल संस्कृतियों की,
शांति की हवा बहे, हमेशा के लिए।
हर भूमि में, हर पंथ में,
प्रेम उत्तर हो, दया बीज हो।

पहाड़ों के पार, समुद्र के पार,
दिलों को एक होने दो, दिमागों को शांत होने दो।
क्योंकि हमारी नसों में, हम सभी एक ही साझा करते हैं,
मानवता का खून, नाम से बंधा नहीं।

सुबह की धुंध की तरह मतभेद मिटने दो,
करुणा के प्रकाश में, घृणा को दूर होने दो।
क्योंकि एक का विश्वास सभी की आशा है,
मानवता के बंधन में, किसी को भी गिरने मत दो।

दुनिया के रंग बांटने के लिए नहीं हैं,
बल्कि एक ऐसी तस्वीर बनाने के लिए हैं जिसमें सभी रह सकें।
मंदिरों से लेकर मस्जिदों तक, चर्चों से लेकर तीर्थस्थलों तक,
हम एक ही शांति, एक ही संकेत चाहते हैं।

हमारी जुबान सम्मान और अनुग्रह के शब्द बोलें,
और हमारे दिलों को पता चले कि प्रेम का एक स्थान है।
हर आस्था, हर विश्वास, हर हाथ,
इस साझा भूमि पर साथ–साथ चलने का हकदार है।

हंसी की गूँज में, गरीबों के आँसुओं में,
समझदारी का राज हो, दया कायम रहे।
क्योंकि दुनिया एक बगीचा है, जहाँ सभी को खिलना चाहिए,
शांति की मिट्टी में, कमरे की धूप में।

हे राष्ट्रों, हे लोगों, आइए हम कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों,
एकता की भावना में, किसी भी तरह की नफरत को न रहने दें।
प्रेम की आग को उज्ज्वल और मुक्त जलने दें,
सद्भाव के प्रकाश में, सभी को देखने के लिए।

पुरोहितवाद की जंजीरों के खिलाफ

ज्ञान की भूमि में, जहाँ ज्ञान का शासन होना चाहिए,
ऐसी आवाज़ें हैं जो बांधती हैं, जो सिर्फ़ दर्द लाती हैं।
वे पवित्र और शुद्ध होने का दिखावा करते हैं,
लेकिन उनके हाथ दागदार हैं, उनके दिल अनिश्चित हैं।

क्योंकि देवताओं के नाम पर, वे अतीत को कसकर पकड़ते हैं,
भविष्य से डरते हैं, जैसे छायाएँ डाली जाती हैं।
अनुष्ठानों और अनुष्ठानों के साथ, वे प्रकाश को रोकते हैं,
लोगों को एक सतत रात में रखते हैं।

वे परम्पराओं की बात करते हैं, पत्थर पर स्थापित नियमों की,
फिर भी दुनिया की चीखों को अनदेखा करते हैं, बिलकुल अकेले।
हाथों में शक्ति और आँखों में भय लिए,
वे उस भावना को कुचल देते हैं जो उठने की हिम्मत करती है।

दुनिया आगे बढ़ती है, बदलाव की हवाएँ चलती हैं,
लेकिन ये पुजारी अभी भी खड़े हैं, उनके दिल दुख से भरे हुए हैं।
वे अज्ञानता और झूठ पर अपना साम्राज्य बनाते हैं,
मूर्खतापूर्वक दावा करते हैं कि प्रगति उनके लिए बाधा है।

लेकिन सत्य को चुप नहीं कराया जा सकता, प्रकाश अवश्य चमकना चाहिए,
क्योंकि प्रगति हर मन का जन्मसिद्ध अधिकार है।
ज्ञान के नाम पर हम अंधकार को दूर भगाते हैं,
और तर्क की चिंगारी को अपनी छाप छोड़ने देते हैं।

अंधविश्वास की जंजीरें अब नहीं बंधेंगी,
भविष्य निडर और खुले दिमाग वालों का है।
हम डर के चंगुल से ऊपर उठेंगे
और प्रगति के पथ पर जोर–शोर से चलेंगे।

हे प्राचीन पुरोहितों, तुम्हारा समय बीत चुका है,
लोग ज्ञान की तलाश करते हैं, वे इसे तेजी से खोजते हैं।
क्योंकि देवता ठहराव की पकड़ में नहीं रहते,
बल्कि बहादुर, स्वतंत्र, साहसी लोगों के दिलों में रहते हैं।

मंदिर ज्ञान और प्रकाश के स्थान बनें,
भय के नहीं, अंधकार के नहीं, रात के नहीं।
क्योंकि भारत सत्य को अपना मार्गदर्शक मानकर आगे बढ़ेगा,
अब उसे आपकी दी हुई जंजीरों से नहीं रोका जाएगा।

बंगाल के गाँव की सच्ची खूबसूरती

बंगाल के हृदय में, जहाँ नदियाँ गाती हैं,
और खेत वसंत के स्पर्श से खिल उठते हैं,
गाँव एक सौम्य अनुग्रह के साथ जागता है,
हर जगह एक कालातीत सुंदरता।

सुबह की धुंध, नरम और चौड़ी,
देहात के रहस्यों को समेटे हुए है।
कोयल इमली के पेड़ से पुकारती है,
हवा में एक राग बहता है।

सूर्य धान के खेतों पर उगता है,
जहाँ सुनहरी फसलें लहलहाती हैं, उनकी भरपूर उपज होती है।
गाँव के रास्ते, घुमावदार और मुक्त,
नदी की ओर ले जाते हैं, बहुत जंगली, बहुत गहरी।

गंगा फुसफुसाती है, इसका पानी उज्ज्वल है,
भोर को प्रतिबिंबित करते हुए, सुनहरा प्रकाश बिखेरता है।
नावें शांत सुबह में धीरे–धीरे बहती हैं,
जैसे मछुआरे जाल डालते हैं, उनका जीवन फिर से जीवित हो जाता है।

भूमि पर बारिश की मिट्टी की खुशबू,
जैसे मानसून के बादल अपना स्थान लेते हैं,
टिन की छतों पर इतनी मधुर आवाज़,
थके हुए पैरों के लिए एक लोरी।

खेतों की हरियाली, आसमान का नीलापन,
बंगाल की गोद में, समय उड़ता हुआ लगता है।
जीवन की सादगी, मिट्टी की खुशी,
पसीने और मेहनत से पैदा होने वाली अंतहीन फसल।

बरगद का पेड़, जिसकी जड़ें इतनी गहरी हैं,
छाया वहीं पड़ती है जहाँ बच्चे सोते हैं।
खेतों में, बूढ़े और जवान एक हो जाते हैं,
ऋतुओं के नृत्य में, दिन और रात

लोकगीत डूबते सूरज के साथ उठते हैं,
एकजुटता की गर्मजोशी, बेमिसाल।
हर कोने में, एक कहानी सुनाई जाती है,
गांव के जीवन की, विनम्र और साहसी।

हे बंगाल, तुम्हारी सुंदरता शुद्ध और सच्ची है,
सरसराहट करते पत्तों में, सुबह की ओस में।
हर चेहरे में, हर मुस्कान में,
तुम दिल को जीत लेती हो, तुम जीवन को सार्थक बनाती हो।

हरे–भरे खेतों और इतने विस्तृत आसमान के माध्यम से,
मैं तुम्हारी प्राकृतिक सुंदरता पर भरोसा करता हूँ।
क्योंकि बंगाल के दिल में एक खजाना छिपा है,
जहाँ शांति और आनंद खुले आसमान से मिलते हैं।

गरीबी, भारत में एक अभिशाप

भारत के ह्रदय में, जहाँ सपने जन्म लेते हैं,
वहाँ एक छाया है, थकी हुई और घिसी हुई।
एक अभिशाप जो चिपक जाता है, चुपचाप रोता है,
भूख से मरते बच्चों और सोती आत्माओं के लिए।

सुनहरे सूरज के नीचे, जहाँ मंदिर उगते हैं,
गरीब छाया में, विनती भरी आँखों से चलते हैं।
धूल भरी सड़कों पर, निराशा के घरों में,
वे भविष्य के लिए लड़ते हैं, लेकिन कोई परवाह नहीं करता।

खेत बंजर हैं, नदियाँ सूखी हैं,
और भूखों की चीखें आसमान में भर जाती हैं।
सोने के शहरों में, और दूर–दूर तक फैले गाँवों में,
गरीबी बनी हुई है, एक कभी न भरने वाला निशान।

अमीर लोग महल बनाते हैं, जिनकी दीवारें बहुत ऊँची होती हैं,
जबकि गरीब सपने बनाते हैं जो मुरझा जाते हैं और मर जाते हैं।
बाजारों में, गलियों में, सड़कों के कोनों में,
गरीब नंगे पाँव, उनके पैरों के नीचे धूल में खड़े रहते हैं।

फिर भी उनकी आत्मा, यद्यपि टूटी हुई है,
झुकती नहीं, क्योंकि वे एक ऐसे दिन का सपना देखते हैं जब संघर्ष समाप्त हो जाएगा।
वे एक ऐसे राष्ट्र का सपना देखते हैं, जहाँ कोई भी गरीब न हो,
जहाँ हर दिल को वह मिले जिसकी उसे चाहत है।

हे भारत, ज्ञान और अनुग्रह की भूमि,
अपनी गरीबी को दुनिया के लिए अपमान न बनने दें।
अपने बच्चों को उनकी आँखों में उम्मीद के साथ बढ़ने दें,
अपने लोगों को उज्ज्वल आसमान के नीचे बढ़ने दें।

क्योंकि गरीबी एक अभिशाप है, एक जंजीर है जिसे तोड़ना ही होगा,
न्याय के लिए लड़ाई, हर आत्मा की खातिर।
परिवर्तन की हवाएँ तेज़ और तेज़ बहें,
पर्दा उठाने के लिए, और भारत को गौरवान्वित करने के लिए।

कोई भूख न हो, कोई आँसू न बहें,
ऐसी भूमि में जहाँ गरीब अब छोटे नहीं हैं।
क्योंकि गरीबी भाग्य नहीं है, बल्कि उठने का आह्वान है,
लोगों को न्याय दिलाने के लिए, भारत के आसमान के नीचे।

सुकांत भट्टाचार्य को समर्पित स्तुति

हे सुकांत, सूर्य के प्रचंड प्रकाश के पुत्र,
तुम्हारे शब्द अँधेरी रात में चिंगारी थे।
क्रांति के कवि, एक दिलदार,
स्याही और आग से, तुम्हारा सच बताया गया।

बंगाल की गलियों में, जहाँ छायाएँ गिरती थीं,
आप अपनी कविताओं के साथ उठे, एक बजती हुई घंटी।
आप उत्पीड़न की जंजीरों के खिलाफ़, मजबूती से खड़े रहे,
बेजुबानों की आवाज़, पुकार का जवाब।

युवावस्था को अपना हथियार बनाकर, अपनी आत्मा में आग भरकर,
आपने उन घावों को भरने की कोशिश की जो आपने झेले थे।
हर पंक्ति में, हर कविता में,
आपने अन्याय को चुनौती दी, समय को पार किया।

आपकी कलम ने तलवार की तरह गहरी ताकत से वार किया,
आपने भविष्य को रोशनी के रंगों में रंगा।
औपनिवेशिक जुए के खिलाफ, ठंड के खिलाफ,
आपने एक ऐसे बंगाल के बारे में लिखा जो उसकी पकड़ को तोड़ देगा।

आशा के कवि, आग के कवि,
आपके शब्दों ने ऐसे सपने जगाए जो कभी थकेंगे नहीं।
लोगों के दिलों में, देश की धड़कनों में,
आपकी आत्मा हमेशा जीवित रहेगी, एक शाश्वत रुख।

कविताओं को अपना साथी बनाकर तुमने आज़ादी की लड़ाई लड़ी,
एक ऐसी भूमि जहाँ न्याय की नदियाँ सद्भाव से बहती हैं।
यद्यपि मृत्यु जल्दी आ गई, लेकिन तुम्हारी ज्वाला कभी नहीं बुझी,
क्योंकि तुम्हारी कविता में क्रांति बढ़ गई।

हे सुकांत, तुम्हारी आत्मा एक ऐसी ज्वाला थी जो इतनी उज्ज्वल थी,
तुमने भविष्य की लड़ाई के लिए रास्ता रोशन किया।
सड़कों और खेतों में, गरीबों के दिलों में,
तुम्हारी कविता हमेशा गूंजती रहती है।

संघर्ष की राख से, तुम्हारे शब्द उठे,
बंगाल के आसमान के नीचे स्वतंत्रता की एक किरण।
इतिहास की हवाओं के माध्यम से, तुम्हारी आत्मा उड़ती है,
क्योंकि तुम, हे कवि, हमेशा हमारे हो।

गलवान की परछाइयाँ

पहाड़ों की खामोशी में, जहाँ नदियाँ बहती हैं,
एक बार शांति की हवाएँ धीरे–धीरे बहती थीं, नरम और धीमी।
लेकिन रात के अंधेरे में, आक्रामकता को ध्यान में रखते हुए,
एक राष्ट्र का सम्मान कुचला गया, एक शांति पीछे छूट गई।

गलवान के तट पर, जहाँ नदियाँ मिलती हैं,
हिंसा की आवाज़ गूंजती है, कड़वी और मीठी।
एक भूमि जो कभी नफरत के हाथ से अछूती थी,
अब उसकी रेत पर खून के निशान हैं।

हे चीन, किस पागलपन ने तुम्हें पाँव रखने पर मजबूर किया,
उस धरती पर जहाँ बहादुर दिलों का खून बहा?
सीमाएँ जो कभी सावधानी से परिभाषित की जाती थीं,
अब एक निर्दयी चमक से फट गई हैं।

तुम अपनी सेना के साथ आए, अपनी चाल में पराक्रम के साथ,
लेकिन शहीदों की आत्माएँ तुम्हारे अभिमान से नहीं हिलीं।
रात की ठंड में, सैनिक खड़े रहे,
सम्मान के लिए लड़ते हुए, अपनी भूमि की रक्षा करते हुए।

तुमने आगे बढ़ने की कोशिश की, जो तुम्हारा नहीं है, उसे पाने की कोशिश की,
लेकिन एकता में राष्ट्र की ताकत दहाड़ती है।
भारत की भूमि के लिए, दिल की धड़कनें बढ़ती हैं,
न्याय के ढोल पर, आसमान की पुकार पर।

गलवान की नदियाँ कभी नहीं भूलेंगी,
शहीदों का दर्द, गहरा, गहरा अफसोस।
क्योंकि दुनिया को पता होना चाहिए, और इतिहास को बताना चाहिए,
शांति की कीमत, और नरक की कीमत।

चीन से, हम ताकत और शालीनता से कहते हैं,
अब तुम इस पवित्र स्थान पर पैर नहीं रखोगे।
क्योंकि भारत की आत्मा, अखंड, खड़ी रहेगी,
एक राष्ट्र एकजुट, दृढ़ हाथ के साथ।

तो दुनिया को सुनने दो, दुनिया को देखने दो,
उन लोगों की वीरता जो स्वतंत्र होने के लिए लड़े।
तुमने जो शांति नष्ट की, हम उसे बहाल करेंगे,
क्योंकि कोई भी राष्ट्र अब तुम्हारे युद्ध से पीड़ित नहीं होगा।

लोकतंत्र और नैतिकता से जन्मी दोस्ती

हे आज़ाद की धरती, हे बुद्धिमानों की धरती,
जहाँ आज़ादी की किरण हमेशा जलती रहेगी,
और पूर्व में, जहाँ प्राचीन सपने जागते हैं,
न्याय के लिए विविधता का राष्ट्र।

दो किनारे अलग–अलग, फिर भी दिल आपस में जुड़े हुए,
संघीय स्वतंत्रता में, हमारी नियति संरेखित है।
लोकतंत्र की भावना, प्रत्येक झंडा फहराता है,
एक आसमान के नीचे, जहाँ उम्मीदें कभी नहीं मरतीं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, जहाँ लोग राज करते हैं,
समानता के दावे पर बना एक गणतंत्र,
और भारत भी, अपने विशाल, विविध हृदय के साथ,
एक राष्ट्र एकजुट है, हालाँकि संस्कृतियाँ अलग हो जाती हैं।

समय के गलियारों से, हमारे रास्ते पार हो गए हैं,
साझा आदर्शों के प्रकाश में, हम कभी नहीं खोते।
क्योंकि नैतिकता और न्याय हमारी साझा जड़ें हैं,
स्वतंत्रता के बगीचे में, हम दोनों हिम्मत करते हैं।

हे वादे, सच्चाई और कानून के राष्ट्रों,
एक दूसरे के प्रति सम्मान के साथ, आइए हम विस्मय में खड़े हों।
हर वोट में, हर आवाज़ में,
हम हर शब्द में अपना लोकतंत्र देखते हैं।

एक मज़बूत साझेदारी, जो भरोसे और देखभाल पर आधारित है,
अराजकता की इस दुनिया में, आइए हम निष्पक्ष रहें।
क्योंकि हम एक साथ, इतने ऊँचे स्तंभों की तरह खड़े हैं,
संघीय एकता में, आह्वान का जवाब देते हुए।

भारत और अमेरिका कंधे से कंधा मिलाकर चलें,
आज़ादी की गोद में, बिना कुछ छुपाए।
ताकत, गरिमा और शालीनता की दोस्ती,
नैतिकता और लोकतंत्र के लिए हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

एडोल्फ हिटलर की काली विरासत

इतिहास के पन्नों में, एक छाया इतनी गहरी,
नफरत की ढलान से एक तानाशाह उभरा।
एडोल्फ हिटलर ने इतने तीखे शब्दों में,
युद्ध के बीज बोए, एक दुनिया को अंधेरे में छोड़ दिया।

एक राष्ट्र उथल–पुथल में, एक लोग दर्द में,
उसने उन्हें गौरव का वादा किया, लेकिन केवल तिरस्कार लाया।
नफरत को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करके, उसने आग को हवा दी,
और लाखों लोगों को मौत और क्रोध के रास्ते पर ले गया।

निर्दोषों की चीखें, सड़कों पर खून,
घायलों की चीखें, युद्ध की क्रूर धड़कनें।
उसके नाम पर, एक दुनिया बिखर गई,
जैसे लाखों लोग वज्रपात से कुचले गए।

होलोकॉस्ट, एक ऐसा अध्याय जो इतना घिनौना है,
जहां मानवता पीड़ा और परीक्षण में पीड़ित हुई।
निर्दोषों की जान ले ली गई,
एक सपने के नाम पर, भटका दिया गया।

लेकिन सत्ता के साथ पतन आया, झूठ के साथ सत्य आया,
दुनिया क्रोध में, दुख में, दया में उठी।
युद्ध के सबक के लिए, दर्द और कीमत के लिए,
हम उन जीवन को याद करते हैं जो दुखद रूप से खो गए।

उसका नाम शापित होगा, उसकी स्मृति अभी भी शापित होगी,
उसने जो दर्द दिया, जीवन को मारने के लिए।
घृणा में कोई गौरव नहीं, अपराध में कोई सम्मान नहीं,
दुनिया को उस समय को कभी नहीं दोहराना चाहिए।

इसलिए हम आज एकजुट होकर खड़े हैं,
यह कहने के लिए कि फिर कभी नहीं, यह कहने के लिए कि हम प्रज्वलित हैं।
क्योंकि बुराई का सामना करने के लिए, हमें एक स्टैंड लेना चाहिए,
कमज़ोरों की रक्षा करने और देश को ठीक करने के लिए।

लियोन ट्रॉट्स्की को श्रद्धांजलि

ओ ट्रॉट्स्की, उग्रवादी, नए की आवाज़,
साहस और दृढ़ विश्वास के साथ, आपने सच्चाई के लिए लड़ाई लड़ी।
क्रांति के दिल में, आपकी आत्मा ने उड़ान भरी,
न्याय के लिए एक प्रकाशस्तंभ, हमेशा दहाड़ने के लिए।

रूस की सड़कों से, आपके सपने उड़ान भर गए,
अत्याचार को उखाड़ फेंकने के लिए, रात को खत्म करने के लिए।
आप वह तूफान थे जिसने पुरानी व्यवस्था को हिला दिया,
मजदूर वर्ग के लिए एक योद्धा, एक दूरदर्शी सपने के साथ।

क्रांति के हॉल में, आप गर्व के साथ खड़े थे,
लेनिन के साथ, छिपने की कोई जगह नहीं थी।
लाल सेना के हमले के माध्यम से, आपने लड़ाई का नेतृत्व किया,
ज़ार और ताकतवर ताकतों के खिलाफ।

आपकी कलम आपका हथियार थी, आपके शब्द आपकी तलवार थे,
समानता की लड़ाई में, कोई डर आक्रमण नहीं कर सकता था।
आपने एक ऐसी दुनिया के लिए रास्ता बनाया,
जहाँ उत्पीड़न की जंजीरें खत्म हो जाएँगी।

फिर भी आपकी यात्रा बिना कड़वी कीमत के नहीं हुई,
क्योंकि इतिहास के दिल में, कुछ लड़ाइयाँ हार जाती हैं।
निर्वासित और शिकार किए जाने के बावजूद, आपने कभी हार नहीं मानी,
समाजवाद के अपने दृष्टिकोण के लिए, आप कभी नहीं छिपेंगे।

हे ट्रॉट्स्की, आपकी विरासत एक ऐसी ज्वाला है जो बुझती नहीं,
जनता के दिलों में, यह उड़ती रहती है।
यद्यपि आपके दिन अंधकारमय हो गए थे, आपकी आवाज़ अभी भी गूंजती है,
उत्पीड़ितों की चीखों में, राजाओं की आशाओं में।

क्योंकि क्रांति कभी पूरी नहीं होती,
जब तक अन्याय जारी रहता है।
हे ट्रॉट्स्की, आपकी आत्मा लड़ाई में जीवित है,
स्वतंत्रता के हर संघर्ष में, हर रोशनी में।

इतिहास के पन्नों के माध्यम से, आपका नाम अमर रहेगा,
क्योंकि समानता का सपना कभी अस्पष्ट नहीं होता।
आप एक क्रांतिकारी, साहसी और सच्चे थे,
और दुनिया लाल और नीले रंग में याद करती है।

पूंजी की पुकार

दास कैपिटल के पन्नों में, सत्य सामने आया,
व्यवस्था की एक कहानी, इतनी निर्दयी, इतनी साहसी।
मार्क्स ने स्याही और बुद्धि से उजागर किया,
समाज द्वारा चुनी गई उत्पीड़न की जंजीरें।

श्रम, पसीने और संघर्ष की दुनिया,
जहाँ मजदूर बंधा हुआ है, फिर भी जीवन के लिए तरसता है।
उसके श्रम का फल, फिर भी उसका अपना नहीं,
क्योंकि धन सिंहासन पर बैठे लोगों द्वारा काटा जाता है।

बाजार की चहल–पहल में, जहाँ सामान बेचा जाता है,
मूल्य मापा जाता है, कहानी सुनाई जाती है।
लेकिन मजदूर, निर्माता को केवल हिस्सा मिलता है,
जबकि पूंजीपति शक्ति के साथ फलता–फूलता है।

चक्र अंतहीन है, संघर्ष वास्तविक है,
मजदूर का परिश्रम, पूंजीपति का सौदा।
मशीनों और कारखानों से धन इकट्ठा होता है,
लेकिन मजदूर का जीवन भुला दिया जाता है, पीछे छोड़ दिया जाता है।

मार्क्स के लेंस के माध्यम से, हम विभाजन को देखते हैं,
जहाँ अमीर और अमीर होते जाते हैं, और गरीबों को वंचित किया जाता है।
अतिरिक्त का नियम, बढ़ता हुआ लाभ,
पूंजी की प्रकृति, वह दुनिया जो वह प्रदान करती है।

फिर भी छाया में, एक आशा चमकती है,
मजदूरों के लिए, जनता, एक दिन एकजुट होगी।
जंजीरें टूट जाएँगी, व्यवस्था गिर जाएगी,
और हम सभी के लिए न्याय की एक नई दुनिया का उदय होगा।

क्रांति के तूफान के माध्यम से, सपना उभरेगा,
समानता की दुनिया, जहाँ कोई इनकार नहीं करता।
क्योंकि दास कैपिटल में, बीज बोया गया था,
एक ऐसे भविष्य की दृष्टि जहाँ सभी बड़े होते हैं।

हे मार्क्स, आपके शब्द रात में एक लौ की तरह हैं,
उत्पीड़ितों को उनके अधिकार को पुनः प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।
हर संघर्ष में, हर लड़ाई में,
न्याय की आपकी दृष्टि हमेशा उतनी ही उज्ज्वल रूप से जलती है।

श्री नरेन्द्र मोदी को श्रद्धांजलि

हे नरेन्द्र मोदी, इतने साहसी नेता,
प्रगति का एक सपना, एक अनकही कहानी।
गुजरात के हृदय से, आप पराक्रम के साथ उठे,
आशा की एक किरण, एक मार्गदर्शक प्रकाश।

अडिग संकल्प के साथ, आप मंच पर आए,
हर युग में एक राष्ट्र का नेतृत्व करने के लिए।
बुद्धि और साहस के साथ, आपने मार्ग निर्धारित किया,
एक स्थिर शक्ति के साथ भारत का संचालन किया।

दिल्ली के हॉल में, जहाँ निर्णय लिए जाते हैं,
आपने निडर होकर एक राष्ट्र के लिए लड़ाई लड़ी है।
संघर्षों और विजयों के माध्यम से, आप मजबूती से खड़े रहे,
भारत की एकता के लिए, आपने अपना सब कुछ दिया है।

प्रगति, नवाचार और सपने के एक चौंपियन,
एक सामूहिक किरण के साथ भविष्य का निर्माण।
मेक इन इंडिया से डिजिटल प्रगति तक,
आपने एक मार्गदर्शक के रूप में आशा के साथ राष्ट्र को प्रज्वलित किया है।

किसानों के लिए, युवाओं के लिए, गरीबों के लिए,
आपने हर उम्मीद के दरवाजे खोलने का काम किया है।
योजनाओं और योजनाओं के साथ, इतने स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ,
आपने साल दर साल न्याय लाने का प्रयास किया है।

चुनौतियों के समय में, आपने बागडोर संभाली है,
भारत को नुकसान और लाभ के माध्यम से मार्गदर्शन किया है।
अपने दिल में साहस और अपने हाथ में ताकत के साथ,
आपने हमें एक समृद्ध भूमि की ओर अग्रसर किया है।

भारत को आगे बढ़ते हुए दुनिया देख रही है,
आपके नेतृत्व में, यात्रा कभी समाप्त नहीं होती।
सम्मान, सम्मान और गर्व के साथ,
आपने इस पथ पर देश को अपने साथ रखते हुए कदम बढ़ाया है।

हे मोदी, आपकी यात्रा सोने में उकेरी गई है,
समय के इतिहास में, आपकी कहानी बताई गई है।
भारत के सपने के लिए, इसके गौरवशाली उत्थान के लिए,
आपने अपनी अडिग आँखों से अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

आपका नेतृत्व प्रेरणा देता रहे,
एक ऐसा राष्ट्र जो ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए नियत है।
हे नरेंद्र मोदी, एक सच्चे नेता,
भारत का भविष्य आपके माध्यम से उज्ज्वल रूप से चमकता है।

एडगर एलन पो के लिए स्तुति

हे अंधकार, छाया और रात के स्वामी,
आपकी कलम ने ऐसी कहानियाँ बुनी हैं जो आज भी हमारी आँखों को झकझोरती हैं।
आत्मा की गहराई से, जहाँ दुःस्वप्न रेंगते हैं,
आपके शब्द मन को नींद से जगाते हैं।

मानव मन के खोखले कक्षों में,
आपकी कहानियाँ वही खोजती हैं जो हम पाना चाहते हैं।
कौवे की चीख, घंटी की गंभीर आवाज़,
पीड़ित आत्मा के दुःख को प्रतिध्वनित करती है।

आपका हृदय भारी था, आपके विचार गहन थे,
दुःख की खामोशी में, आपकी आवाज़ गूंजती है।
ष्नेवरमोरष् के साथ, दुनिया हिल गई,
आपके दुःख, आपके नुकसान, आपकी आत्मा के अनकहेपन से।

प्रेतवाधित ''टेल–टेल हार्ट'' से लेकर ''फॉल ऑफ़ द हाउस'' तक,
आपकी स्याही ने प्रकट किया कि घर में क्या रहता है
मन का – अंधेरा, टेढ़ा और गहरा,
जहाँ रहस्य छिपे हैं और छायाएँ रेंगती हैं।

पागलपन, प्यार और निराशा की तुम्हारी कहानियाँ,
महज़ कहानियों से कहीं ज़्यादा थीं– वे बेपर्दा करती थीं
सबसे गहरे डर जिन्हें हम नकारने की कोशिश करते हैं,
तुम्हारे शब्द वो फुसफुसाहट हैं जो कभी नहीं मरतीं।

''द ब्लैक कैट'' में, ष्द कास्क ऑफ़ अमोंटिलाडोष् में,
तुम्हारी प्रतिभा अँधेरी छाया में बह गई।
एक कवि, एक भविष्यवक्ता, एक खौफ़ का स्वामी,
छवियाँ लंबे समय तक बनी रहती हैं, उन्हें पढ़े जाने के बाद भी।

भले ही दुनिया ने मज़ाक उड़ाया हो और खारिज किया हो,
तुम्हारी प्रतिभा कभी खोई नहीं, कभी याद नहीं आई।
क्योंकि रात के दिल में, हम देखते हैं
पो की प्रतिभा, हमेशा के लिए मुक्त।

1857 का महान विद्रोह

भारत के हृदय में ज्वालाएँ उठीं,
जनता की चीखों से पैदा हुआ विद्रोह।
उत्पीड़कों के विरुद्ध, विदेशी शासन के विरुद्ध,
देश जाग उठा, अब मूर्ख नहीं रहा।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया ने अपने लौह हाथों से,
इस प्राचीन भूमि की आत्मा को कुचल दिया था।
वे लालच और क्रूरता से, नियंत्रण करना चाहते थे,
लेकिन लोगों के दिल उग्र और साहसी थे।

मेरठ की बैरकों से, आग भड़क उठी,
जैसे ही सैनिक उठे, उनकी आवाज़ गूंज उठी।
सिपाहियों ने, अदम्य साहस के साथ,
अपने सम्मान, अपनी स्वतंत्रता के लिए, साहसपूर्वक घोषणा की।

दिल्ली के लाल किले में, विद्रोही खड़े थे,
बहादुर शाह ज़फ़र के साथ, उन्होंने अपना अंतिम मोर्चा बनाया।
मुगल सम्राट ने, अपनी शाही गरिमा में,
अपने चेहरे पर गर्व के साथ, आक्रमण का नेतृत्व किया।

विद्रोह की लपटें दूर–दूर तक फैल गईं,
झांसी के किले से लेकर देहात तक।
रानी लक्ष्मीबाई ने तलवार उठाई,
अपने लोगों के लिए लड़ी, कभी यह नहीं पूछा कि क्यों।

हवा आग और धुएं से भरी हुई थी,
जैसे–जैसे गाँव उठ रहे थे, सन्नाटा टूट रहा था।
कानपुर में, लखनऊ में, आगरा के खेतों में,
आजादी की पुकार दूर–दूर तक गूंज रही थी।

लेकिन अंग्रेजों ने अपनी ताकत और अपने प्रभाव से,
उन्हें दूर रखने के लिए जमकर मुकाबला किया।
खून–खराबे और नुकसान के बावजूद, संघर्ष जारी रहा,
लेकिन विद्रोहियों का संकल्प धुंधला नहीं हो सका।

हालाँकि विद्रोह को कुचल दिया गया था, लेकिन चिंगारी बनी रही,
हर आत्मा में, सपना कायम रहा।
भारत के बच्चों के लिए, इसने रास्ता रोशन किया,
फिर से उठने के लिए, एक और दिन लड़ने के लिए।

1857 का महान विद्रोह, अवज्ञा की एक कहानी,
खामोशी के सामने आजादी की पुकार।
आज़ादी का अग्रदूत, एक बीज बोया गया,
शहीदों के खून में, भारत बड़ा हुआ।

तो, उन बहादुरों को याद करो, जिन्होंने अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया,
एक आज़ाद भारत के लिए, अच्छे और बुरे के लिए।
उनका संघर्ष आज भी हमारे दिलों में ज़िंदा है,
क्योंकि आज़ादी का सपना कभी नहीं टूटेगा।

नेपाल में लोकतंत्र की जीत

हे हिमालय की धरती, इतनी भव्य और ऊंची,
जहां लोग आसमान छूने के लिए उठे।
उत्पीड़न के सामने, इतनी मजबूत आवाज के साथ,
उन्होंने न्याय का गान गाया, एक अथक गीत।

कई सालों तक वे पीड़ित रहे, इतने लंबे समय तक छाया में,
लेकिन स्वतंत्रता की भावना साहसी और मजबूत हुई।
देश के दिल में, एक चिंगारी प्रज्वलित हुई,
लोकतंत्र की आग, तेज रोशनी से जगमगा उठी।

लोगों ने अपनी आंखों में उम्मीद के साथ एकजुट होकर,
पुराने, अंधेरे संबंधों से मुक्त होने का दृढ़ संकल्प किया।
काठमांडू की सड़कों से, हर दूर की पहाड़ी तक,
वे साहस के साथ आगे बढ़े, उन्होंने दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ लड़ाई लड़ी।

विरोधों और संघर्षों के माध्यम से, दर्द और संघर्ष के माध्यम से,
वे न्याय के लिए, जीवन के एक नए तरीके के लिए लड़े।
प्रत्येक बीतते दिन के साथ, प्रत्येक उगते सूरज के साथ,
लोकतंत्र का सपना आखिरकार जीता गया।

जनता की आवाज़ें, एकता में, बोल उठीं,
अत्याचारियों के खिलाफ, जुए के खिलाफ।
राजा के महल से लेकर लोगों की गलियों तक,
क्रांति विजयी धुन पर आगे बढ़ी।

हे नेपाल, तुम्हारी जीत आशा का गीत है,
भविष्य के लिए, शांति के लिए, सपनों के लिए।
घाटियों और पहाड़ों के माध्यम से, हर दिल के माध्यम से,
लोकतंत्र की जीत कभी नहीं मिटेगी।

अब नेपाल के लोग गर्व और ऊंचाई से खड़े हैं,
एक राष्ट्र का पुनर्जन्म, सभी के लिए जीत।
एक नए युग की सुबह, जंजीरों का टूटना,
स्वतंत्रता में लोगों की जीत बनी हुई है।

हे साहस, न्याय और प्रकाश की भूमि,
तुम्हारी जीत चमकती है, साहस और उज्ज्वलता से।
लोगों के नाम पर, स्वतंत्र के नाम पर,
नेपाल दुनिया को दिखाने के लिए गर्व से खड़ा है।

भगत सिंह को श्रद्धांजलि

हे भगत सिंह, धरती के लाल,
एक शहीद जो पसीने और मेहनत से उठ खड़ा हुआ,
अपने दिल में आग और दिमाग में न्याय के साथ,
आप सभी मानव जाति की स्वतंत्रता के लिए खड़े हुए।

उत्पीड़न की भूमि में, आपने अपना रास्ता बनाया,
एक भोर, एक उज्जवल दिन के लिए लड़ते हुए।
एक ऐसे राष्ट्र का सपना, जो स्वतंत्र और बंधनमुक्त हो,
जहां अत्याचार खत्म हो और न्याय वापस मिले।

लाहौर की सड़कों से लेकर दुनिया की पैनी निगाहों तक,
आपने अत्याचारियों को ललकारा, आपने उड़ने का साहस किया।
हर कदम के साथ, आपका साहस गाता रहा,
विद्रोह का गीत, एक देशभक्त का वसंत।

आपकी जवानी आपका हथियार थी, आपके शब्द आपकी ताकत थे,
अंधकार के खिलाफ, आप प्रकाश थे।
आपने एक ऐसी भावना से लड़ाई लड़ी जिसे तोड़ा नहीं जा सकता था,
एक स्वतंत्र भारत के लिए, आपका प्यार अनकहा था।

आपने जो बम फेंके, वे नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं बल्कि जगाने के लिए थे,
राष्ट्र के लिए एक आह्वान, एक लड़ाई शुरू करने के लिए।
लोगों के अधिकारों के लिए, बोलने की आज़ादी के लिए,
आप बेजुबानों, बहादुरों और नम्र लोगों की आवाज़ बन गए।

हे भगत सिंह, आपकी विरासत बुलंद है,
लोगों के दिलों में, हम आपका नाम याद करते हैं।
आपके बलिदान की आग में, भारत उठ खड़ा हुआ,
एक राष्ट्र जागृत हुआ, जिसकी आँखों में आज़ादी थी।

फाँसी ने आपको नहीं तोड़ा, न ही जेल की ठंडी ज़ंजीरों ने,
दर्द के बावजूद आपकी आत्मा अडिग थी।
आपकी शहादत ने कारण की ज्वाला को जलाया,
और एक राष्ट्र को अन्यायपूर्ण कानूनों को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया।

हे भगत सिंह, आपने देश के लिए सब कुछ दिया,
एक नायक, एक किंवदंती, एक महान दृष्टि के साथ।
यद्यपि आपका जीवन छोटा था, लेकिन आपका प्रभाव व्यापक था,
आपके साहस के लिए, हे देशभक्त, हमेशा के लिए रहेगा।

युवाओं के दिलों में, आपकी आत्मा उड़ान भरेगी,
स्वतंत्रता का प्रतीक, हमेशा के लिए।
हे भगत सिंह, आपके खून ने आग जलाई,
न्याय के लिए, सत्य के लिए, और अधिकार के लिए एक क्रांति।

झांसी की रानी को श्रद्धांजलि

हे रानी लक्ष्मीबाई, एक शेरनी जो बहुत साहसी थी,
साहस की एक कहानी, इतिहास में दर्ज है।
एक मजबूत दिल और एक उज्ज्वल भावना के साथ,
आप एक योद्धा की तरह खड़ी थीं, लड़ने के लिए तैयार थीं।

झांसी के किले से, आपका शासन उभरा,
वीरता की रानी, आपकी आँखों में आग थी।
उत्पीड़न के सामने, आप झुकेंगी नहीं,
अपने लोगों की स्वतंत्रता के लिए, आप अंत तक लड़ेंगी।

अंग्रेज आए, लालच के साथ,
लेकिन आप, हे रानी, भागीं नहीं और न ही छिपीं।
अपने हाथ में तलवार और सिर पर मुकुट लेकर,
आपने अपनी सेना का नेतृत्व किया, जहाँ दूसरे लोग डर सकते थे।

आप घोड़े पर सवार होकर, भयंकर और अडिग होकर,
अपनी भूमि की रक्षा करते हुए, गर्व से खड़ी रहीं।
आपका राज्य, आपके लोग, लड़ाई के लायक थे,
अंधेरे के दिल में, आप रोशनी थीं।

साहस की लड़ाई में, आप एक मार्गदर्शक के रूप में खड़ी रहीं,
न्याय के लिए, सम्मान और गर्व के साथ लड़ती रहीं।
आपकी बहादुरी ने एक राष्ट्र की पुकार को प्रज्वलित किया,
अत्याचार के खिलाफ उठ खड़े होने का, कभी न गिरने का।

जब दुनिया ने हार देखी, तो आप पीछे नहीं हटीं,
एक शेर के दिल के साथ, आपने हर धड़कन का सामना किया।
आपका साहस किंवदंतियों और लोककथाओं का विषय बन गया,
हमेशा के लिए शक्ति का प्रतीक।

यद्यपि ब्रिटिश सेना ने अपनी ताकत के साथ संघर्ष किया,
आपकी आत्मा, हे रानी, ने स्वतंत्रता को जीवित रखा।
क्योंकि आपकी मृत्यु में, एक आग पैदा हुई,
जो प्रत्येक नई सुबह के साथ फिर से उठेगी।

हे रानी लक्ष्मीबाई, आपका नाम हम पूजते हैं,
एक रानी, एक योद्धा, हमेशा ईमानदार।
हर भारतीय के दिल में, आपकी विरासत है,
क्योंकि आपने हमें कभी समझौता नहीं करना सिखाया।

झांसी की हवाओं में, आपकी आत्मा अभी भी घूमती है,
साहस, स्वतंत्रता, घरों का प्रतीक।
हे रानी, आपकी याद आसमान में अंकित है,
क्योंकि न्याय के लिए आपकी लड़ाई कभी खत्म नहीं होगी।

कार्ल मार्क्स को श्रद्धांजलि

हे कार्ल मार्क्स, इतनी गहरी दृष्टि के साथ,
इतिहास के गलियारों में, आपकी आवाज़ गूंजती है।
एक ऐसा दिमाग जो शोषितों को मुक्त करना चाहता था,
और एक ऐसी दुनिया का निर्माण करना चाहता था जहाँ सभी धन्य हों।

दास कैपिटल के पन्नों में, आपने लिखा,
न्याय की दृष्टि, विद्रोह का आह्वान।
पूंजीवाद की ताकत की जंजीरों के खिलाफ,
आपने एक आग जलाई, एक प्रकाश की किरण।

अपने हाथ में कलम और अपनी आत्मा में सच्चाई के साथ,
आपने घावों को भरने, लोगों को संपूर्ण बनाने की कोशिश की।
श्रम के संघर्षों में, गरीबों की चीखों में,
आपने अन्याय देखा, और आपने उसे बहाल करने की कसम खाई।

द्वंद्वात्मकता के माध्यम से, आपने रास्ता दिखाया,
कैसे इतिहास दिन के संघर्षों से आकार लेता है।
शासक वर्ग का उत्थान और पतन,
समय की चाल में, सभी को गुजरना होगा।

हे मार्क्स, आपने एक स्वतंत्र दुनिया की बात की,
एक ऐसा समाज जहाँ सभी समान रूप से रह सकें।
अब अमीरों के पास सत्ता नहीं रहेगी,
क्योंकि मजदूर उठेंगे, एकता में वे सुसज्जित होंगे।

आपके विचार क्रांतिकारी थे, आपके सिद्धांत विशाल थे,
लेकिन लाखों लोगों के मन में वे हमेशा के लिए रहेंगे।
क्रांतियों और परिवर्तन की पुकार के माध्यम से,
आपके विचार दिलों तक पहुँचे, नज़दीकी और अजनबी दोनों तरह के।

हालाँकि इतिहास ने आपको दयालु और ठंडी दोनों तरह की नज़रों से आंका,
समानता के लिए आपका दृष्टिकोण कभी पुराना नहीं हुआ।
मज़दूर के पसीने में, ज़मीन की मेहनत में,
न्याय का आपका सपना हमेशा के लिए खड़ा रहेगा।

हे कार्ल मार्क्स, आपकी विरासत बनी रहेगी,
हर संघर्ष में, हर लाभ में।
एक ऐसी दुनिया के लिए लड़ाई जहाँ सभी स्वतंत्र हों,
वह लड़ाई है जिसे आपने सभी को दिखाने के लिए प्रज्वलित किया है।

युगों–युगों तक, आपका नाम अमर रहेगा,
क्योंकि न्याय की लड़ाई कभी अस्पष्ट नहीं होती।
हे कार्ल मार्क्स, सपना अभी भी पनपता है,
लोगों के दिलों में, उनके प्रयासों में।

द्रौपदी की स्तुति, साहस की रानी

हे द्रौपदी, भाग्य के महलों में,
जहाँ राजा और योद्धा बहस करने के लिए मिलते हैं,
तुम शालीनता से खड़ी थी, तुम्हारी आँखों में आग थी,
एक रानी, एक महिला, जो उग्र और बुद्धिमान दोनों थी।

अग्नि से जन्मी, तुम्हारा भाग्य स्पष्ट था,
शक्ति, आशा और भय का प्रतीक।
युद्ध के मध्य में, तुमने अपना पक्ष रखा,
अडिग साहस के साथ, तुम्हारी इच्छाशक्ति की मांग थी।

जब पासे फेंके गए, और दरबार शांत था,
तुमने अपनी पीड़ा का सामना बेजोड़ इच्छाशक्ति के साथ किया।
शर्म के महल में, जब सब कुछ खो गया लग रहा था,
तुम्हारी गरिमा बढ़ी, चाहे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

अपमान के सामने, निराशा के सामने,
तुमने बिना किसी प्रार्थना के न्याय का आह्वान किया।
तुम्हारी पुकार सत्य के उत्थान के लिए एक दलील थी,
खुले आसमान में देवताओं के लिए एक वसीयतनामा।

हे धरती की बेटी, हे पवित्र बहन,
तुम्हारी आत्मा ने सहन किया, इस बात का हमें यकीन है।
विश्वासघात के दरबार में, नफरत के तूफान में,
तुम निडर खड़ी रही, भाग्य को चुनौती देती रही।

जीवन की परीक्षाओं में, आग और खून के बीच,
तुम कभी झुकी नहीं, तुम कभी झुक नहीं सकती।
क्योंकि तुम्हारे दिल में वीरता की आग जलती थी,
एक वीर महिला, जो कभी गुलाम नहीं बनी।

हे द्रौपदी, इतने बड़े दिल वाली रानी,
तुम्हारा नाम पूरे देश में एक प्रकाश स्तंभ है।
तुम्हारी परीक्षाओं में, तुम्हारे दर्द में, तुम्हारी अनंत कृपा में,
तुम हमें खड़े रहना सिखाती हो, चाहे कोई भी जगह हो।

महिलाओं की गरिमा के लिए, न्याय के लिए,
तुमने बहुतों, कुछ लोगों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।
एक शाश्वत विरासत, शक्ति और गौरव की,
सम्मान की लड़ाई में, तुम हमारे साथ खड़ी हो।

डिएगो माराडोना के लिए स्तुति

ओ डिएगो, सुंदर खेल के राजा,
आपका नाम, फुटबॉल की लौ में हमेशा के लिए अंकित हो गया है।
लानुस की गलियों से लेकर दुनिया के भव्य मंच तक,
आपने डिफेंडरों के बीच नृत्य किया, आपने हर पिंजरे को तोड़ दिया।

अपने पैरों पर एक गेंद के साथ, आप गति में कविता थे,
कौशल की एक सिम्फनी, भक्ति का एक गहरा सागर।
हर पास के साथ, हर ड्रिबल के साथ,
आपने गौरव की कहानियाँ बुनी, अनकही जीत की।

अर्जेंटीना की धरती पर, आपका दिल प्रज्वलित हुआ,
एक राष्ट्र का गौरव, एक प्रकाश की किरण।
और 1986 के उस भाग्यशाली दिन, इतने शानदार,
आपने कप उठाया, दुनिया को अपने हाथ में लेकर।

"ईश्वर का हाथ" और "सदी का लक्ष्य,"
फुटबॉल के इतिहास में अमर हो चुके दो पल।
एक जादूगर, एक अलग सोच रखने वाला, एक उभरता सितारा,
दुनिया की निगाहों में, तुमने आसमान को चुनौती दी।

तुम्हारे पैर, शान और ताकत से उड़े,
लंबी, अंधेरी रात में गेंद को दिशा देते हुए।
हर स्टेडियम में, हर दहाड़ में,
तुमने खेल को पहले से कहीं ज़्यादा दिया।

जीत और चुनौतियों के बीच, तुमने अपना दिल पहना,
एक जुनूनी आदमी, कभी टूटा नहीं।
हर चुनौती में, हर गिरावट में,
तुम फिर से उठे, ऊंचे उठ खड़े हुए।

हे माराडोना, तुम्हारी विरासत ज़िंदा है,
हर ड्रिबल में, हर गाने में।
दुनिया तुम्हारे जादू, तुम्हारी आग को याद करती है,
क्योंकि तुम्हारी महानता में, हम सभी आकांक्षा रखते हैं।

नेपोली की सड़कों से लेकर वैश्विक मंच तक,
तुम एक किंवदंती, एक शेर, एक ऋषि थे।
हे डिएगो, गेंद हमेशा के लिए लुढ़केगी,
क्योंकि तुम्हारी आत्मा हर गोल की दहाड़ में ज़िंदा है।

विलियम शेक्सपियर के लिए ओड

ओ बार्ड ऑफ़ एवन, तुम इतने महान कवि हो,
जिनके शब्द आज भी भाग्य के द्वारों से गूंजते हैं,
हाथ में कलम लेकर, तुमने एक बढ़िया टेपेस्ट्री बुनी,
प्रेम और त्रासदी की, भाग्य की रचना की।

जीवन के मंच से, तुमने सत्य को पुकारा,
हर युग में, युवावस्था में और रूथ में।
तुम्हारी कलम, एक तलवार जो रात को चीरती है,
भाषा की एक मास्टर, प्रकाश की एक किरण।

तुम्हारी कविताएँ, नदियों की तरह, भावनाओं से भरी हुई गहरी बहती हैं,
जुनून की एक सिम्फनी, एक असीम महासागर।
प्रेम की मधुर पीड़ा और दुःख के गहरे कुएँ के माध्यम से,
तुमने मानव हृदय, उसके उत्थान और पतन के बारे में बात की।

वेरोना के बगीचों में, तुम्हारे प्रेमी रोए,
और एल्सिनोर के भूत चुपचाप रेंगते रहे।
हर राज्य में, हर देश में,
तुमने जीवन को एक प्रतिभाशाली हाथ से चित्रित किया।

राजाओं की शक्ति, पुरुषों की मूर्खता,
मूर्खों की बुद्धि और महिलाओं की चीखें।
तेरे पात्र जीवित रहे, सांस ली और मर गए,
हर दृश्य में, जहाँ सत्य छिप नहीं सकता।

हे शेक्सपियर, तेरी विरासत हमेशा जीवित रहेगी,
हर मंच पर, हर गीत में।
समय बीतने के साथ, तेरे काम बने रहेंगे,
मानवीय भावना के शासन का एक प्रमाण।

एक शब्दकार, एक स्वप्नद्रष्टा, एक कवि, एक ऋषि,
जिसकी कला हर सदी और युग से परे है।
दुनिया के दिलों में तेरा नाम अमर रहेगा,
क्योंकि तेरे शब्दों के ज़रिए, हम हमेशा के लिए निश्चित हैं।

हे शेक्सपियर, कवि, तू दिव्य है,
हर कविता में, हर पंक्ति में।
सितारों की तरह तेरी चमक हमेशा चमकती रहेगी,
युगों की आवाज़, एक शाश्वत सपना।

ताजमहलः एक कालातीत आश्चर्य

भारत के हृदय में, जहाँ नदियाँ बहती हैं,
प्रेम का एक स्मारक, एक कालातीत चमक के साथ।
ताजमहल, अनुग्रह और शक्ति के साथ उगता है,
सुंदरता का एक प्रकाश स्तंभ, कोमल चाँदनी में।

संगमरमर इतना शुद्ध, ऊपर बादलों की तरह,
अनंत प्रेम की फुसफुसाहट के साथ उकेरा गया।
प्रत्येक जटिल विवरण, प्रत्येक नाजुक रेखा,
दिलों की एक कहानी कहती है, हमेशा के लिए जुड़ी हुई।

ऊँचे मेहराबों और ऊँची मीनारों के साथ,
यह प्रेम की पुकार के लिए एक वसीयतनामा के रूप में खड़ा है।
सममिति की एक सिम्फनी, कला का एक काम,
आत्मा को, दिल को एक श्रद्धांजलि।

इतने हरे–भरे बगीचों में, फव्वारों के साथ जो गाते हैं,
ताजमहल रानी की अंगूठी की तरह चमकता है।
नीचे पानी पर प्रतिबिंब नृत्य करते हैं,
गोधूलि की चमक में अनुग्रह की एक दृष्टि।

संगमरमर के गुंबद के नीचे, जहाँ मौन बोलता है,
एक सम्राट का प्यार जिसे वह चाहता है।
भक्ति, लालसा और दर्द की कहानी,
पत्थर में कैद, हमेशा के लिए रहने के लिए।

हे ताजमहल, तुम्हारी सुंदरता दिव्य है,
समय के हाथों से तराशी गई एक उत्कृष्ट कृति।
हर मोड़ में, हर पत्थर में,
प्रेम की गहराई छिपी है, अमर और जानी हुई।

दुनिया को अपने वैभव पर अचंभित होने दो,
क्योंकि तुम प्रेम की शुद्ध रोशनी का प्रतीक हो।
अतीत की रेत में एक शाश्वत आश्चर्य,
ताजमहल की सुंदरता, हमेशा बनी रहेगी।

कमला हैरिस के लिए शक्ति की कविता

हे कमला, अपने दिल में साहस के साथ,
हालाँकि सर्वोच्च पद की राह शुरू नहीं हुई,
हार की छाया में, निराश मत हो,
क्योंकि तुम्हारी यात्रा अभी भी चमक रही है, तुलना से परे।

शान के साथ तुम उठी, पुरानी बाधाओं को तोड़ते हुए,
विजय की कहानी, साहस की इतनी साहसिक कहानी।
सत्ता के गलियारों में, तुम्हारी आवाज़ सुनी गई,
बुद्धिमानी की एक महिला, हर शब्द के साथ।

हालाँकि राष्ट्रपति पद का इरादा नहीं था,
तुम्हारा प्रभाव बहुत बड़ा है, जिसे पूरी दुनिया देख सकती है।
तुमने आने वालों के लिए रास्ता तैयार किया है,
हर सपने देखने वाले के लिए, और हर एक के लिए।

तुम्हारी ताकत सिर्फ़ उपाधियों से नहीं मापी जाती,
बल्कि तुम्हारे द्वारा बोए गए आशा के बीजों से मापी जाती है।
क्योंकि तुमने हमें दृष्टि दी है, तुमने हमें रास्ता दिखाया है,
कि महिलाएँ नेतृत्व कर सकती हैं, कि हम भी टिक सकते हैं।

संदेह के क्षणों में, निराशा के समय में,
तुम्हारे प्यार और विरासत को याद रखो।
क्योंकि तुमने अनसुनी आवाजों को बुलंद किया है,
और दुनिया को दिखाया है कि साहस क्या होता है, हर शब्द के साथ।

रास्ता भले ही लंबा हो, और लड़ाई अभी भी कठिन हो,
लेकिन तुम्हारा प्रकाश एक मार्गदर्शक तारे की तरह चमकता है।
कमला, तुम्हारी यात्रा अभी पूरी नहीं हुई है,
हर कदम आगे बढ़ने के साथ, दुनिया तुम्हारे कदमों में है।

इसलिए अपना सिर ऊंचा रखो, और गर्व के साथ खड़े रहो,
क्योंकि भविष्य तुम्हारा है, और वह तुम्हारे अंदर ही बसता है।
कोई भी जीत या हार तुम्हारी कीमत नहीं माप सकती,
क्योंकि तुम इस धरती पर ताकत की किरण हो।

शेख हसीना के लिए शक्ति की प्रार्थना

हे जनता की नेता, मजबूत और सच्ची,
दुख का बोझ आप पर है।
दुख की लहरों के बीच आपका दिल बहता है,
फिर भी आपकी आँखों में आँसू नहीं हैं।

क्योंकि आपकी आत्मा में अभी भी एक आग जलती है,
साहस की एक लौ जो कभी नहीं बुझती।
हालाँकि नुकसान हुआ है, इतना गहरा, इतना व्यापक,
आपकी आत्मा खड़ी है, एक राष्ट्र का गौरव।

दुख की छाया में, आपकी शक्ति बढ़ेगी,
जैसे सूरज सबसे गहरे आसमान को चीरता है।
आप उन लोगों की यादें लेकर चलते हैं जिन्हें आपने खो दिया है,
लेकिन आपका दिल, प्यारी हसीना, नहीं डगमगाएगा।

आप जिस रास्ते पर चल रहे हैं, हालाँकि वह खड़ी और लंबी है,
प्यार, और उम्मीद, और गीत द्वारा निर्देशित है।
क्योंकि आपके दुख में, आप अकेले नहीं हैं,
बांग्लादेश के लोग आपको अपना घर कहते हैं।

शांति की हवाएँ आपकी आत्मा को ऊपर उठाएँ,
जैसे आप दर्द को ठीक करते हैं, और उसे पूरा करते हैं।
हालाँकि रास्ता उबड़–खाबड़ है और बोझ भारी है,
तुम शालीनता से चलते हो, जहाँ फ़रिश्ते चलते हैं।

हर आँसू और हर आह के ज़रिए,
तुम हम सबको आसमान तक पहुँचने का तरीका सिखाते हो।
हे हसीना, तुम्हारा दिल अनकही ताकत से धड़कता है,
साहस, दृढ़ और निडर की विरासत।

अंधेरे पलों में, इस सच्चाई को याद रखो,
प्यार की रोशनी तुम्हारी जवानी को नया कर देगी।
और अतीत की फुसफुसाहटों में, तुम सुनोगे,
उन लोगों की आवाज़ें जिन्हें तुम प्यार करते हो।
इसलिए दुख से ऊपर उठो, इसे परिभाषित न होने दो,
क्योंकि तुम्हारा साहस और दिल हमेशा चमकता रहेगा।
समय हमेशा की तरह उपचार लाए,
तुम्हारी प्यारी हसीना, प्यार का प्रतीक हो।

मोहनदास करमचंद गांधी को श्रद्धांजलि

हे गांधी, राष्ट्र की आत्मा के प्रकाश,
साहस और सत्य के साथ, आपने हमें संपूर्ण बनाया।
एक शांति की किरण, एक टूटी हुई दुनिया में,
आपकी आवाज़ शांत, सबसे कोमल गड़गड़ाहट की तरह उठी।

एक ऐसी भूमि में जन्मे जहाँ छायाएँ मंडराती थीं,
आपने उदासी को तोड़ने का मार्ग प्रशस्त किया।
प्रेम से भरे हृदय और स्वतंत्र होने की इच्छा के साथ,
आपने हमें विनम्रता की शक्ति सिखाई।

दक्षिण अफ्रीका की सड़कों से लेकर भारतीय तट तक,
आपने करुणा के साथ, और अधिक के लिए लड़ाई लड़ी।
हथियारों से नहीं, बल्कि अपनी दलील की ताकत से,
आपने दुनिया को दिखाया कि सच्ची शक्ति मुफ़्त है।

अहिंसा, आपका हथियार, इतना शुद्ध और इतना बुद्धिमान,
सदा–नीले आसमान के नीचे शांति की क्रांति।
नमक मार्च और उत्पीड़ितों की चीखों के माध्यम से,
आपने हमें स्वतंत्रता की ओर अग्रसर किया, आशीर्वादित साहस के साथ।

साम्राज्य के सामने, आप निडर होकर खड़े रहे,
न्याय और सत्य के लिए, आप कभी नहीं झुके।
उत्पीड़क की जंजीरें आपकी आत्मा को नहीं बांध सकीं,
क्योंकि आप शांतिपूर्ण लक्ष्य की शक्ति जानते थे।

चरखा चलाकर, आपने सपना बुना,
एक राष्ट्र की एकजुटता का, सर्वोच्च न्याय का।
आपने हमें सिखाया कि प्रत्येक आत्मा की एक आवाज़ होती है,
कि एकता और प्रेम में, हम चुनाव करते हैं।

हे गांधी, आपकी विरासत दूर–दूर तक फैली हुई है,
हर उस दिल में जहाँ सत्य बसता है।
दुनिया आपकी बुद्धिमत्ता, आपकी कृपा को याद करती है,
क्योंकि आपके पदचिन्हों पर, हम अपना स्थान पाते हैं।

एक पिता, एक नेता, शक्ति का प्रतीक,
आपने गलत को सही बनाने के लिए लड़ाई लड़ी।
आपकी याद में, दुनिया ऊँची है,
क्योंकि आप ही वह प्रतिध्वनि हैं जो पुकार का उत्तर देती है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस को श्रद्धांजलि

ओ नेताजी, राष्ट्र की पुकार की आवाज़,
आपके दिल में आग और आँखों में चिंगारी।
अत्याचार के सामने, आप साहसपूर्वक खड़े रहे,
जंगल की खामोशी में शेर की दहाड़।

भारत की धरती से लेकर दूर–दूर तक,
आपने एक चमकते सितारे की तरह आज़ादी की तलाश की।
अपनी अदम्य इच्छाशक्ति और जुनून के साथ,
आपने साम्राज्य के गलत कामों को चुनौती देने का साहस किया।

युद्ध के तूफ़ान और संघर्ष के तनाव के बीच,
आपने बिना झुके, कठिनाई और दर्द के बीच आगे बढ़े।
मातृभूमि के सम्मान के लिए, आपने अपना सब कुछ दे दिया,
आह्वान का जवाब देते हुए, खड़े रहे।

बर्मा के जंगलों में, विमान उड़ते रहे,
आपकी सेना की भावना गरजने की तरह थी।
आपने दिलों को एकजुट किया, आपने भूमि को जगाया,
सिंहों के साहस के साथ, आपने अपना रुख अपनाया।

आजाद हिंद, तुम्हारा सपना, तुमने बहुत सावधानी से गढ़ा,
लोगों को आज़ाद करने के लिए, निराशा को मिटाने के लिए।
भारतीय राष्ट्रीय सेना के साथ, तुमने रास्ता बनाया,
स्वतंत्रता की सुबह के लिए, सूरज के नए दिन के लिए।

हे नेताजी, तुम्हारी विरासत दूर–दूर तक फैली हुई है,
हर उस आत्मा में जहाँ देशभक्ति बसती है।
तुमने अपना जीवन, अपने सपने इस उद्देश्य के लिए समर्पित कर दिए,
न्याय के योद्धा, सभी कानूनों को चुनौती देते हुए।

राष्ट्र तुम्हारी निस्वार्थ शक्ति को याद करता है,
हर धड़कन में, हर लड़ाई में।
भले ही तुम्हारा शरीर नीचे धरती में समा जाए,
तुम्हारी आत्मा, हवाओं की तरह बहती रहती है।

हर युवा दिल में जो उठने की हिम्मत करता है,
हर विद्रोही में जो आसमान पर सवाल उठाता है,
नेताजी, तुम्हारा नाम हमेशा जाना जाएगा,
क्योंकि तुम वो ज्वाला हो जो चमकती रही है।

बराक हुसैन ओबामा को श्रद्धांजलि

हे आशा के बच्चे, इतने व्यापक दृष्टिकोण के साथ,
तुम्हारी यात्रा गर्व की हवाओं पर शुरू हुई।
हवाई के तटों से शिकागो की सड़कों तक,
तुम्हारा मार्ग संघर्षों और करतबों से भरा था।

शान और संतुलन के साथ, और इतनी स्पष्ट आवाज़ के साथ,
तुमने बदलाव की बात की, एक ऐसे भविष्य की बात की जिसका सम्मान किया जा सके।
विभाजन के सामने, इतनी टूटी हुई दुनिया में,
तुम एक प्रकाश स्तंभ की तरह उभरे, एक राष्ट्र का पुनर्जन्म हुआ।

''हाँ, हम कर सकते हैं!'' – बहादुरों के लिए एक मंत्र,
कार्रवाई का आह्वान, बचाने की प्रतिज्ञा
समानता, न्याय और शांति का सपना,
सभी युद्ध समाप्त होने तक प्रयास करने का वादा।

ओवल ऑफ़िस से, तुमने बुद्धिमत्ता के साथ नेतृत्व किया,
परीक्षणों और विजयों के माध्यम से, जहाँ स्वर्गदूत चल सकते थे।
दुनिया ने देखा कि कैसे तुमने नए रास्ते बनाए,
अशांत दिनों में आशा का प्रतीक।

साहस के साथ, आपने तूफान और संघर्ष का सामना किया,
जीवन की गहराइयों से राष्ट्र का मार्गदर्शन किया।
स्वास्थ्य सेवा सुधार और राष्ट्र की दुर्दशा के माध्यम से,
आपने आम भलाई के लिए, जो सही था उसके लिए लड़ाई लड़ी।

हे ओबामा, आपकी विरासत बुलंद है,
क्योंकि आपके नेतृत्व में, हमने खड़े रहना सीखा, गिरना नहीं।
लोगों के लिए दिल और आसमान पर नज़र रखते हुए,
आपने हमें आगे बढ़ने, उड़ने का साहस दिया।

अफ्रीका का बेटा, सपनों का बच्चा,
आपने हमें विश्वास करना सिखाया, स्वतंत्रता के प्रकाश की किरण पर भरोसा करना सिखाया,
न्याय के शासन की,
और कभी नहीं भूलना कि हम कहाँ से आए हैं।

अब आपका नाम इतिहास के गलियारों में गूंजेगा,
उस व्यक्ति के लिए एक वसीयतनामा जिसने कॉल का जवाब दिया।
क्योंकि अमेरिका के दिल में, आपकी दृष्टि बनी रहेगी,
भविष्य का मार्गदर्शन करते हुए, रास्ता रोशन करते हुए।

जीवन की सिम्फनी

पंखा धीरे–धीरे गुनगुनाता है, इसकी कोमल हवा,
सहजता से बहते बादलों की तरह फुसफुसाती है।
रात भर बिजली की धाराएँ चमकती हैं,
आकाशीय प्रकाश में सितारे पुनर्जन्म लेते हैं।

कुंडली चमकती है, शक्ति का चूल्हा,
चाँदनी रात में जुगनू का नृत्य।
भीतर, उद्देश्य की लौ जलती है,
समय का एक पहिया जो हमेशा घूमता रहता है।

जीवन, एक पेड़, जिसकी जड़ें मिट्टी में हैं,
इसकी शाखाएँ वहाँ पहुँचती हैं जहाँ सपने रहते हैं।
प्रत्येक पत्ता जन्म की प्रार्थना फुसफुसाता है,
प्रकृति का असीम पृथ्वी के लिए भजन।

शरीर पृथ्वी और आकाश से बनता है,
अग्नि और वायु सामंजस्य में रहते हैं।
धर्मी कर्मों के माध्यम से, मनुष्य ऊपर उठता है,
एक नश्वर का परिश्रम जहाँ देवत्व घुलमिल जाता है।

लेकिन बुराई, एक छाया, चमक को फीका कर देती है,
जैसे फूल जहाँ जहर बहता है वहाँ मुरझा जाते हैं।
फिर भी पुण्य खिलता है, एक उज्ज्वल कमल,
सबसे अंधेरी रात से शुद्ध निकलता है।

इसलिए अपने जीवन को नदियों की तरह तराशें,
एक ऐसा कालातीत मार्ग जहाँ आत्माएँ भूखी रह सकें।
क्योंकि प्रकृति दिव्य हाथों से पुकारती है,
एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए जहाँ सितारे संरेखित हों।